

ॐ श्रीश्यामाश्यामायनमः ॥

श्रीशुकदेवपरीक्षितसंवादित

अनिरुद्धपरिणायकथाप्रारम्भः ॥

अथ मंगलाचरणम् देवादिमुनिवन्दना ॥

दोहा ॥

श्रीगणपति शारद सुमिरि शिव गिरिजापद कंजु।
ब्रह्मा विष्णु सुरारि नमु गुरु बुध कबि मुनि मंजु ॥

नृपपरीक्षित प्रति श्रीशुकदेवोवाच ॥

चौपाई ॥

ब्रह्म तनय कश्यप यशुराशू । सुत हिरण्य कश्यप भा ताशू ॥
बहुरि तासु प्रभु भक्ति गृहीता । भयउ पुत्र प्रह्लाद पुनीता ॥
त्यहि कुमार भा भूप बिरोचन । तेहि धर्म्मध्वज भयो बलि सुवन॥
नृप बलि ज्येष्ठात्मज तेजस्वी । बाणासुर भा तीव्र तपस्वी ॥
पराक्रमी व जितेन्द्री घोरा । ब्रह्मचर्य्य सतवादि न थोरा ॥
शोणितपुर यक नग्र ललामा । सुखयुत तासु तहां विश्रामा ॥
शिव हित जाय सदा कैलासा । पूजहि शंभु सहित विश्वासा ॥

मन बच क्रम हित चित रति साधै। यहि विधि हरदिन हर आराधै॥
यकदिन भा प्रमोद प्रेमैके। लै मृदंग वर बाज बजैके॥
शंभु गुणानुवाद सुठि गावा। नृत्य प्रसार भाव बहु छावा॥
लखि सत प्रेम बाणु को स्वामी। प्रकट उमा युत अन्तरयामी॥
ह्वै प्रसन्न शिव ताहि जतावा। वरंब्रूहि अस बचन सुनावा॥

दो० सुनि शिव बच बाणा मुदित दीनातुर अस भान।
जो कृपाल अनुकूल मम हो मुहिं यह बरदान॥

सो० करिय अमर मुहिं नाथ सकल अवनिको राज दै।
कीजै बली अगाथ जीत सकै नहिं कोउ जगत॥

चौ० भोलानाथ भक्त सुखदाई। एवमस्तु कहि अस पशुराई॥
सर्व्व शंकते निर्भय होऊ। त्रिभुवन में तुहिं जितै न कोऊ॥
भुज सहस्र बलधारक धारो। अबिचल राज करहु सुखसारो॥
अस शिव बर लहि दै परिक्रमा। लै आज्ञा गा भौन ताक्षमा॥
निशचरनिकर संग लै भारे। त्रिपुर जीत वशकर सुर सारे॥
निज पुर चहुं जल च्चानिकखाई। अग्नि पौन को कोट सृजाई॥
निर्भय राज करै सुख सेती। दासिदास कुल त्रियन समेती॥
षटरस बिबिध पाइ नित अशना। फरकहिं सबलभुजा साहसना॥
करै मनहिं मन रणकी चहैना। कोउ लख परै बली जगमहैना॥
यक दिन जा गिरिलग्यो उखारन। तोर फोर लाग्यो महि डारन॥
थक्यो न तबहुँ प्रबल बलकारी। मिलै न कोउ वाहि रणधारी॥
जोम भर्यो तब सोचत भयऊ। कहकरुँ सहस भुजा शिवदयऊ॥

दो० अस बिचारि गा शिव समिप भन्यो बाण बलवंत।
हे त्रिशूल पाणी प्रभो मुनि जन सुखद अनंत॥

सो० दीं सहस भुज मोहिं तस बलवान कियो महा।

कोउ जग परत न जोहि ज्यहिभिर अभिलाषापुरहु॥
छंद गीतिका॥
यहि हेतु हौं बृषकेतु आयो युद्ध मो सँग कीजिये।
नहिंआनकोउबलवानयोधाखोजमुहिं प्रभुदीजिये॥
सुनिअसुरवचनमहेशाबिलखितमनहिमनकहिबेलगे।
यहि समुझ साधु सो बर दियो कस कपट खल सों हमठगे॥
बल पाइ गर्ब्यो मूर्ख हौं सँगही उपस्थित रणतई।
जग जियत दुस्तर यासु को अभिमान कर तिहुँपुरठई॥
कर मन मथन अस बृषध्वज हँसि अधममति सन यह कहो।
अतुराउ जनि कछु दिन में यदुकुल कृष्ण अवतरिहैंअहो॥
नँद ललन बतुहिं तृष्टिहैं मृज समर तव मन भावत्यो।
नहिं आन कोउ अरिसकैतोसन मल्ल जग न जनावत्यो॥
चौ० सुनिशिवसोंहरिजन्मजुड़ान्यो। है निहालसन्मुखसोंभान्यो॥
कब जनमै गो वह नर ईशा। हौं कस जनिहौं उहिजगदीशा॥
तब त्यहि शंकर दइ यक तोरन। कह यह लैगृह जाउ बहोरन॥
धाम ध्वजा देउ बांध सम्हारी। जबहिं गिरै यह धरणि मँझारी॥
तब जनिये जन्म्यो नर जोई। तो मन मन्शा पूरक सोई॥
लै पताक शिव नमु चलि धावा। यक मुहूर्त्त महँ मंदिर आवा॥
जाइ अटा बैरख बँधवाई। भृत्यन आयसु दीन्ह बुझाई॥
ज्यहि छिन गिरहि झंडिका भूपै। तुरत खबर करियो हमहूँपै॥
दिन दिन ओर निहारै ताकी। कब बिनशै ध्वज भौनअटाकी॥
कब जन्मै मम बैरि कठोरा। ज्यहितन लरहुँ करहुँ रणघोरा॥
यहिबिधि जब बहुकाल सिरान्यो। सुरापान कर खल उभरान्यो॥
ज्येष्ठि रानि बाणावति भवना। प्रीत पुराय तासु सँग रमना॥

दो० भइ गर्भित रानी रुचिर नवमासी पश्चात।
शुभदिन लग्न कुमारिका तासु भई शुभगात॥
सो० सुनि सँदेश अस बाणु जाई प्रिय पुत्री सुघर।
बाढ़्यो आनँद प्राणु निश्चर कुल कौतुक रचहिं॥
छं० ना० नटानटी नवांगना नवीन नृत्य नाचतीं।
अपूर प्रेम पुंज पुण्य पृथ्विपति प्रवांचतीं॥
गँधर्व सर्व मागधादि बंदि भाट याचकौ।
अनंद बाधये बजाइ गाइ मान वाचकौ॥
झरै नगार नौबतौ नफीर भेरि बांसुरी।
सितार स्वरबहार शब्द स्रोद हों प्रकासुरी॥
सुबेनु वैन बैन बीन वृन्द मोद कारनी।
बजै कहूं मृदंग चंग संग सुःख सारनी॥
सुरील सारँगी सुढंग स्वरशिंगार सोहने।
रबाब भाव न्यारही सरंदहू प्रमोहने॥
कहूं सुतान पूर सूरबाहकौ छिरैं भले।
मजीर झांझ झानकैं सुतूर भूर कौथले॥
पुरंदरौ पुरीपुनीत केरि पुंज नावला।
सजे समूह गावतीं बजावतीं सुतावला॥
जुरी पुरी समस्त बाम साज साज साज को।
निवेद सोंठ कंद देहिं रानि कोइ लाजको॥
मणीं अनेक रत्न वित्त कापड़े अभूषना।
सुता सुवार हेत देइ रानि को बनाठना॥
बजै बिगूल बाजने समाजने बहू बहू।
सुढोल ढोलकी ढफा चिकार खंजरी चहू॥

तँबूर तूर भूर तोरही त्रिवन तयूसिहू।
घर्सीट सीठ तास डिम्डिमीहु डौरु शृंगिहू॥
सुताल घूंघुरू मुचंग नस्तरंग न्यारिहू।
सलिह्न जलतरंग रंग मूरली सुखारिहू॥
महान मौहरो घड़ाल शंख शोर घोर से।
बिजैघरा घड़ौंच्र इक्करा वरा चुं ओर से॥
भले भले अनंत बाज बाजहीं बधावरे।
लिये ललन सु अंकवाम मान दान पावरे॥

चौ० बहुरि बोल बुध बाणउचारो। सुताकेर गुणनाम बिचारो॥
पत्र खोल बुध दिन तिथि योगू। सायत लग्न मुहूर्त सुभोगू॥
मास पक्ष शुभ शोध घड़ीको। ग्रह नक्षत्र निरख अतिनीको॥
ऊषानाम कुँवरि को गायो। अन धन ग्राम धाम बहु पायो॥
बरण सुता की भाग्य बड़ाई। निज निज गृह बुध गयउ पराई॥
ज्यों ज्यों कुँवरि बैस बढ़ पावे। त्यों पितु जननी लाड़ लड़ावे॥
सप्त बर्ष की भई दुलारी। तब यह बिधि मन बाणबिचारी॥
बाराणशी निकट पुर केरे। बसहिं शिवोमा जहँ हितु मेरे॥
कह सखि सुता संग लै धावौ। युगल शरणजा पढ़व सिखावौ॥
पितुरुचि लखि ऊषा त्यहि बारी। शिव शरणागत जाइ पधारी॥
श्री गणपति शारदा मनयके। शिव गौरी सन्मुख शिर नयके॥
पाणि जोरि विनती बहु गाई। बिद्या दान मँगी निपुणाई॥

दो० दीन बचन ऊषा बिरचि शिवहि सुनायो जोइ।
बिद्यारंभ कराइ शिव भर प्रमोद छल खोइ॥

सो० सन्मुख करि मुख तात भक्तवसल दाता बिभव।
किंचित कालहि जात सर्व्व शास्त्र ज्ञाता कियो॥

स० यंत्रन तंत्रन बेदन भेदन सर्ब्ब कलाप्रिय शंभुसिखाई।
बाणसुता गुणवान भई बहु शीलउजागरि रूपनिकाई॥
एकदिना कहुँ मैनसुता सँग ऊषहु यन्त्रगहे गुणदाई।
रीत सँगीत सुगाय ललन् बर बीन बजाइ रही सुखदाई॥

चौ०त्यहिछिनआयउशंभुसुजाना। लखिप्रियह्वैमुदपुनिअसभाना॥
हौं जो उमा मनमथहि जरावा। त्यहिको श्रीगुपाल उपजावा॥
असकहि शिवलै शिवा सिधाये। सुरसरि नीर तीर जा न्हाये॥
सुख इच्छाकर प्रियहित पागे। उमहि शृँगार सजावनलागे॥
ह्वै निदान आनँद रसमायउ। बजै डँमरु तांडव नृत लायउ॥
गाइ राग संगीत रीति सों। उमहि रिझै भर अंक प्रीतिसों॥
चाउ भाउ युत हरषा हरषा। युगल मुदित भे सुखरस बरषा॥
ता छबि लखि सुखप्यार अनेकी। ऊषहु रुचिभइ पियमिलनेकी॥
दैव कंथ कबधौं हौं पाइब। जोशिवसमसुख हमहुँसु जाइब॥
श्री हिमवान लली सुखकारी। लखिरुचि ऊषहि निकटगुहारी॥
द्वादस बँधै शीश धर हाथा। दियउ उमाबर सुखदअगाथा॥
तब अभिलाष पूर्ण प्रिय होही। स्वप्नमध्य पति मिलिहै तोही॥

दो० तैं ढुँढ़ाय लीजै बहुरि भोगिय भोग सुखमांहि।
अस बरदै ऊषहि उमा बिदाकियो गृह कांहि॥

सो० गइ पितु पास कुमारि रूपशील छबि आगुरी।
गण गुणवाननिहारि बाण प्राण अतिमुदितभा॥

स० वैछिन बाण बिशाल सुताहित सुन्दर मन्दिरवा बिरचावा।
ताहि निवासलियो तनया लैसङ्गसहेलरियां सुखपावा॥
या विधि चन्द्रकला समबाढ़ति द्वादशवर्ष जबैसिनआवा।
मन्मथ जोम जमै ललनी तनरूप अनूपअनूठ सृजावा॥

चौ० चन्द्राननकी ज्योति जुहारे। पूर्णमाहु शशि लज्जितभारे ॥
अलकावलि अवलोकि सुकारी। दुरहि अमावास्या अँधियारी ॥
चितै चारु चोटी सटकाई। सङ्कजांइ नागिनिखिसियाई ॥
भृकुटि बंकुताई अस भाई। धिकधिक धनु कमानुखमनाई ॥
दृग दीर्घता देखि अरबिन्दा। झवेंश्यामता निरखि मलिन्दा ॥
चंचलता लखि मीन मलोना। शितपनपेखि खँजन हों छीना ॥
लखि लंबितपन अम्ब कि फांकैं। दरकजांइ उर निबू अथाकैं ॥
गोल सुडोल गहिर गुलियाई। लखि शिल शालग्रामलजाई ॥
मद बिलोकि मदता गम्भीरा। जोम होमकर होहिं अधीरा ॥
अजब अरुणता के अवलोके। मनु गुलाब छवि गुमईधोके ॥
बिनु कजरा अनूप कजरारे। हाव स्वभाव कटाक्ष सुधारे ॥
शील सीलसों गुले गुलोहे। प्रेम प्रीति पुनि पुरे प्रमोहे ॥
दो० सैन कटाक्ष विलक्षणी जनु दुधार तरवारि।
चित चितौन चोरनचपल चपलासे अतिभारि ॥
सो० हेरन हारन हीय बशीकरन मोहनी निधि।
टुनवा जदुवासीय अनुपम टुकभुक भँकनछवि ॥
स० पलकैं सरपुंज मनोजवती धरधार नुकील नई गतिसों।
दृगधाम पपोटिक पारदमें मनु भालरसीभमकें अतिसों ॥
चख चंचल चाल चलांक चपैं न चपैं चपकैं चकचौंधतसों।
ललनेशभलोअँखियांअलिकी पखियांपलकैं कि जटावतिसों ॥
चौ० कीरकायरी निहर नासिका। मनहुं रूपपति रूपरासिका ॥
भाल विलोकि होत अस शंका। थल पियूष धौं खंड मयंका ॥
कल कपोल कोमलता देखी। गत गुलाब प्रफुल नगर पेखी ॥
अधरअरुणता लखि छबिकारी। बिलबिलान बिंबा फलधारी ॥

दंत पंक्ति लखि दाड़िम दाने। मुक्काहल द्युति हीर हिराने॥
गल गुलाइ नवछवि सरसावत। कंबुकुदर कपोत कुम्हलावत॥
कंध अंध छवि वृषभ करेरी। दार मृनाल हरैं भुजजेरी॥
करकराइ कल कुमल अनैसी। मनुबिनु आस्ति सुहत बहुतैसी॥
करहथेलि जनु दल अरुणाम्बुज। मनहुंसूक्ष्मकियेमेंहदिरंगजुज॥
अँगुरिन भा सुठिता अस जोरी। चंपकलिन करेज दरकोरी॥
नखनवनोखि चोखि लखज्योती। आव शिताब उतारत मोती॥
खरकत खद्योतहु हिय माहीं। हा विधिअसभालहि हमनाहीं॥

दो० कुचन ओरलखि कमलकलि छिरी सरोवर जाइ।
कटि केहरि कछुना जचै असकटि कृशितसुहाइ॥

सो० यहि लज्जा मन धारि सिंहन बनबासा लियो।
बलि बलि वार निहारि पातरपन पाथर परे॥

क० उदर चिकनानपै सुमाखन लजानपै भुलान मखतूल मान-तूल धिक मान्योहै। ऊपर गुरान पै निरखि छवि खान पै कदलिहू गिलान पै कपूर भक्ष ठान्योहै॥ देह रंग सान पै सुचंपक चकान पैहुहेम हद मान पै सुचंद मुरझान्यो है। पद्महू पदान पै स्वपद्धि तुच्छ ध्यान पै ललनि सयान पै न इन्द्र बधू खान्यो है॥

नव यौवना रूप सरसाही। गजगामिनि असबाणसुताही॥

(अन्य प्रसंग)

चौ० यकदिनवहसुंदरिछविआगर। गुसलकरनकोकीन्हमतावर॥
वर सुगंध इतरादिक तेला। नीर नाइ मैदा महँ मेला॥
यहि विधि उबटन अंग अँगायो। निर्मल नीर सुचील हनायो॥
करकंघी चोटी गुहि पटियां। मुतियन मांग मनोहर डटियां॥
अँजन अंजु अँखियनु अनहोनी। भाल बिंदु दै सुभग सलोनी॥

मुखमंजन रद मिसी मसाहत। अधर उदाहट धड़ी धकाहत॥
गौर चिबुक स्यह बिंदु ललामा। मनहुं मदन कीन्हों विश्रामा॥
मुख तँबोल बीड़ी की लाली। लाल लजै भा व्योम निराली॥
कंजकरन मेहँदी रँग राची। बीरबहूटिन हू छबि लाची॥
पगन महावरि रुचि रचि कोहीं। धनुषअरुणता लगहि लजोंहीं॥
अँग अँग अछे सूबरन गहिने। रतनजड़े तिन छबिकहककहिने॥

दो० शीशफूल बेना बँदी बद्धी पटियां छापि।
कटियां झूमर झिलमिलहिं बेनिपानटीकापि॥
सो० श्रुतिफुल बाली पात तरकि मुरकि बाली बिजुलि।
मीना बुँदे सुहात बिचकनि झूमैं झूमके॥

छंदगीत॥

शिर मौर खौर सुभाल मकराकृत्त कुंडल श्रुतिवरे।
झलकाबुलाका मोरनी लटकन बिसरनके नथपरे॥
गल गुलूबंद सुगोफ गुंजहु कंठिकंठा जुगनुगन।
तोड़ाजँजीरदुलरि त्रिचौ पच छ सत नवलरिअनगनन॥
कमनीय कठुला चंदनी सोनईं मोरनि जो कृती।
कंघई गंगा यमुनि हीरन दाल हार सजेउ प्रती॥
धुकधुकी नांदलि जलजि विद्रुमि रुद्राक्षि मृदंगिवत।
कमलाक्षि धनियइ कमरखी मनमुहन मालसजी सुहत॥
पुखराज माणिक हीर पना फिरोज्ञ बिद्रुम निलमणी।
नवरतनि लहसुनि मुक्कई बहुलरा बद्धी तीक्षणी॥
कचकली चंपाकली हसुली तौक हैकल उरबसी।
सकरी लसैतीं तैंति कंठ सिरी गरे शोभालसी॥
जोशनजगामग जोति नौरत्नावली चौकी इके।

नौनगे भुजबँद बाजुबँद अंगद अनंत सुसाजिकै॥
डँड़ ठोस टड़ियां नौगिरहिं बरबांक बंगलियांजड़ीं।
विलसितबहुँटमथानि मंजुलजहांगीरी तिलकड़ीं॥
तिचुरनपंखी परम सुन्दर साजिकै ऊषा हिये।
छबिछन्नभिन्नपछेलिकंगनिकँगनपहुँचिप्रभालिये॥
सोनई मूँगइ धनियई मरदानि चुहेदती सुहैं।
कलकड़ेकेहरि नाकदहँ सादा नकाशिक मनमुहैं॥
दामस सुकाटी चूरिहीर तराशि चित्रित बहुबरन।
हथफूलजड़ियाआरसी अँगुरिनछला मुँदरीभरन॥
पोरियां चित्र विचित्र पोरन चित्तचोरन चांगली।
कटिकर्धनीछबि क्षुद्रघंटि दिपै पिअरितनुभांगली॥
सुतकड़े कड़े छड़े जड़े पइजेब पहुँटे सांकरे।
छागल पलनियां छजैं छापैं बोर अनवट पांवरे॥
गुजरीमटरबिछुये चुटकियांतुरियांछँड़ियांपँचगले।
पक्रपाननहियांलछीबलकड़ियां छलैं मनपगछले॥
असबाणुललनाकिांरि ऊषा साजिनखशिख जेवरा।
पट पहिर परमपुनीत बनठन मुकुरलखि मुदहीयरा॥
चौ० जरतारी सारी सुखसारी। सुहत घाँघरो घेर घुमारी॥
चमचमात नगजड़े प्रभाकर। जगमगात कंचुकी छटाकर॥
मलित सुगंध अंग अलबेली। कर रुमाल ओढ़नी सुहेली॥
पाणि पुहुप गहि परम सुबासी। बनी नागरी छबिकमलासी॥
अस सजधज लै संग सहेली। पितु प्रणामहित चली नवेली॥
जाइ पिता ढिग कीन्ह प्रणामा। पितुलखिसुता रूप छबिधामा॥
कहि यह भइ अब ब्याहन योगी। मुहिंनकछुकसुधिभयउबियोगी॥

कन्या आशिष दै गृह टारी। पुनि निश्चरगण बोलअपारी॥
बिपुल राक्षसिहुं टेर सुनायो। सबहिनप्रतियह हुकुमलगायो॥
जा गृह सुता करहु हुशियारी। कोउ कुचालगहिसकैनक्कारी॥
बाण प्राणधर आयसु बांका। करनलगे चौकसी सनाका॥
भल बलकारि भारि खलसारे। बाणसुताहि न पलकबिसारे॥
दो० निश्चरिगण हूं सर्व्वनित राज सुतापति हेत।
पूंजहिं उमा महेश मिलि जप तप ब्रतकरि नेत॥
सो० ऊषहु शुभबर काज नितशिव गिरिजा पूजही।
बिनवै हे बृषराज है सहाइ आनँद बरौ॥

गर्ज्जल छन्द॥

रहे निशिदिन बिकल प्यारी पियाकी यादगारीमें।
न नींद आवे न कुछ भावे सजनकी इन्तज़ारीमें॥ १॥
ज़िकरयकनिशिका दुखमातीपड़ीसेजियाअकेलीथी।
मनैमन सोचती सुंदरि मदन की बेकरारी में॥ २॥
करै कब ब्याह पितुमेरा मिलै क्योंकर पिया मुझको।
बिथा अबतो सहीजाती नहीं बिरहाकी ख्वारीमें॥ ३॥
ये कहिते २ ज़ो सोई तो देखा स्वप्न में क्या है।
सलोना श्यामतन कोई खड़ा मेरे अगारी में॥ ४॥
रसीले नैन नीरज से मुकट शिर मौर माथे पर।
फबन शशि मुखपै बालासी मोहनी रूपदारी में॥ ५॥
किशोर आयू त्रिभङ्गीछबि मकरआकृतश्रवण कुंडल।
गले बनमाल बैजन्ती बसी नोखी बहारी में॥ ६॥
छबीले श्यामरे तन पै पिताम्बर यों छजे छबिसे।
मनो मनमोहनी दामिन दमकू घनघोर कारीमें॥ ७॥

जड़ाऊ हीर आभूषण छटा जिनकी निराली तन।
कहूं क्या क्या सिफतजोबन न आसक्ती शुमारीमें॥ ८॥
हँसनचितचोर रसबतियां सुना मनहरलिया छिनमें।
लगाकर तनसे तन रसकेलिकी निंदिया खुमारीमें॥ ९॥
जगा जिसदम मदन बैरी निगोड़ी नींदभी भागी।
जो खोलूं द्दग तो कुछ ना कुछ परी सूनी अटारीमें॥ १०॥
बढ़ा अब सोचका सागरमें डूबे छिन उछलतामन।
द्दगन से नीर जारी तन पसीनागत अपारी में॥ ११॥
नसुधिबुधिकुछभीतनमनकी हियेअभिलाषदरशनकी।
लगी लौ उसललनकी जिसकीहूं बेचैन यारी में॥ १२॥

ठु० रा० मालकौश॥

हा निंदिया निर्दई दई रे दई तैं काहे को खुलगई उचट गई रे निंदिया निरदई॥ अंतरा॥ नेक न देख सकी सुख मोरा कैसि दगा मिल दई दई रे दई॥ १॥ ऐसीहि प्रीति करत कोउ क्यहु सों जस तैंने निभई दई रे दई॥ २॥ जस तसकर मैं पायो पियरवा फिरकर सून भई दई रे दई॥ ३॥ तैं पापिन बैरिन अस मोरी यम यामिन कर दई दई रेदई॥ ४॥ जानि लियो तोहिं निठुरनिगोड़ी तैं छल छंद छई दई रेदई॥५॥ ललनपनो नाहिंगयो तिहारो अब तुहिं समझगई दई रेदई॥ ६॥

चौ० प्रिय बियोग माती बेचैना। पिय पेखनहित बिकलित नैना॥
श्वास श्वास प्रति लेहि उसासा। भरिआवत द्दग परम उदासा॥
कहत निहोरि बहोरि बहोरी। मिलिय प्राणपति लै सुधिमोरी॥
नहिं तुमबिन जियबचब न मोरा। जो तुम दरशन देव किशोरा॥
स्वपन्यहि में पुनिआन दराशिये। वहिबिधि मुहिंयकबार परशिये॥

कोटि कान सुन मम मिनती को। मैं तन मन बलिजाउं सबीको॥
तुमबिन नहिं कोउ जीवनस्वामी। तुम सब जानत अंतरयामी॥
प्रणपालन जनके सुखदाता। तुमहिंहितू ममतुमहिं बिधाता॥
असपिय भजि पुनि उगोबियोगा। लै खट पाट परी युत शोगा॥
पट मुख ढांप मूंद दृग गोरी। रहि अचेत निशि भोर भयोरी॥
चकी शकी अहि डसी मसीसी। परी प्रयंक अंक अवसीसी॥
अचल शिथिल अँग अंग मुईसी। सुरहु कला बुध सुरत खुईसी॥

दो० छुई मुई सुकमारि तन लहि पट भार अनंत।
मुरझी मौन मलीन ह्वै बिनु जल दरशन कंत॥
सो० सखियन सोच बिचार भइ अचरज मातीं सकल।
कहभो राजकुमारि लखहु तनु चल सबकहें॥
नितहि चाक चौबंद सदा उठै बिनु रबि उदय।
आज सोइ सुखकंद जगी न दुपहर दिनगयो॥

अथ प्रभातीइकताला॥

कूष्मांड प्रिय प्रधान बाणासुर केरो। जासु चित्रलेखा शुभ सुता गुण घनेरो॥ अंतरा॥ रूपनिधि उजागरी। स्वरूप शील आगुरी॥ सहूर सूर भागरी। सुहागरी उजेरो॥ १॥ ऊषा सँग के-रि सखिन। तिन महँ सो मुकुट मणिन॥ चल बल छलछंद प-गिन। ठगन गुनन गेरो॥ २॥ बहुतरूपिया जु लोग। तिन की शिरमौर योग॥ भोग योग बिधि सँजोग। जानति बहुतेरो॥ ३ चातुरी अनन्त खानि। माया मुहनी प्रधानि॥ लरकन महँ ललन-वृद्ध बूढ़नमें हेरो॥ ४॥ बहु पुनीत चित्रकार। सुर नर मुनि जनवकार॥ किन्नर निश्चर अगार। त्रिपुरि ले बसेरो॥ ५॥

चौं.सखिनचकितलखिमहामलीना।सुनिश्रुतिकछुअसउपदुखचीन्हा

चित्रलेखाउवाच॥

भन्यो चित्रलेखा सखि काहै। राजसुता की कह चर्चाहै॥

सख्योवाच॥

कहि सहेलि त्यहि चरित सुनायो। सुनिलेखाहियअतिअकुलायो॥
बेग जाइ कै रंगमहल सो। उषा कुंदर लखि भई अचलसो॥
पलँग परी प्रिय भरहि उसासैं। रुदनसुगातिलखिदुखपरिकासैं॥

चित्रलेखाउवाच॥

तब तो उर रहि सकी न धीरा। बिकलित बोली का भो बीरा॥
हे मम प्राणप्रिया सुकमारी। तैं पुरि जन मन जीवन प्यारी॥
हमकिंकरि कुल सगी तिहारी। पठइ बाणु करिबे हुशियारी॥
सो हौं कोउ कछु जान न पावा। तुहिं दुख अहियहिभाँतिडसावा॥
चेतु सुता नतु लै विष खैहौं। का मुख लै बाणा ढिग जैहौं॥
निशितुहिंअछिभलिनिरखिसयानी।आजअचानकअसदुखसानी॥
निकस जांइ मम प्राण तनैसे। हौं न लखौं हा तव दुख ऐसे॥

दो० किन कारन रोदत प्रिया तैं अति बिह्वल प्रान।
अपनु भेद बद सकल मुहिं शपथ मोर करु कान॥
सो० हौं तव सकल कलेश परिहरि हौं यक छिनक में।
जो जिय में जिय शेश करहुं काज बिन लाज तव॥

छंदगीतिका॥

मोसी सखी नहिं आन तव दरबार में कोउ जानिये।
मुहिं प्रान गयउ न हानि कछु तव हेत तन मन मानिये॥
मुहिं शक्ति अस चहुँ लोक सब फिर आऊं सत्य प्रमानिये।
जहँ जाउँ काम बनाऊं बिमुख न आऊं यह उर ध्यानिये॥

बिधि बर दियो सब वश कियो मम चहूं जिय स्वइ कर सकूं।
रहे सँग सहायक शारदा त्यहि बल सों नहिं कबहूं चकूं॥
मुहिं महा मोहनि रूप मानों छलिन मायावी महा।
मम भेद नहिं कोउ लखि सकै अज रुद्र इन्द्र छलूं अहा॥
नभफारि प्योंदा देंउ पैठि पताल गिरि बारिध तकै।
मैं अपन गुन सब आप कहुं नहिं और कोउ अस भन सकै॥
अस दै दिलासा प्रण प्रकासा चित्रलेखा चतुर जब।
जिय जान प्रिय सत मीत ललना बचनसुन कछु चेतितब॥

चौ० पट उघार मुद नेक निहारी। सावधान ह्वै उठी दुलारी॥
सिसकिनु शरद उसाँस सिरावै। उचक हुचकि नहिं नेक हिरावै॥
गद गद ह्वै वश सकुच सयानी। कहन चहत कछु सकत न भानी॥

ऊषाउवाच॥

पै पगि प्रेम सुहृद लेखाके। बोली प्रियपुनि मुद मुसिक्याके॥
तैं सहेलि मम परमहि प्यारी। अपन ज़ान तुहिं कहत उचारी॥
हौं जु कहौं कोउ आन न जानै। दै निजु शपथ बदतधरु ध्यानै॥
आजरात की बात बताऊं। कहन योग नहिं तोहिं सुनाऊं॥
सोवतही सुख सेज मँझारी। कह देखूं स्वप्नो उहिबारी॥
दृग अगार यक नर आदरसों। निजुपनिलखिबासँगसुखपरसों॥
श्याम बरन तनरूप मुहनियां। चित चोरन चपलाचितवनियां॥
मोर मुकुट कच घूंघरवारे। लट नागिनि कुंडल श्रुतिधारे॥
तन किशोर छबि अमितछटाकी। मदन फबन द्युति पीत पटाकी॥

दो० मंजुल मृदु मुसिक्यान मनु बशीकरन सो डार।
रस बतियनकर मन लियो गरभर बिलसबिहार॥

सो० मैनअस्खलित होत उचट नींद नैना खुले।

लखी न पुनि वह ज्योति जगी ठगीसी रहिगई ॥

क० गाढ़ो बाढ़ो वियोग विरहीको दुख सयोग शोग रोग पोग हीय उपजो अथाकरी। दुर मुर आगेपीछे देखि चहूँ दिशि तीछे पै न पेख प्रानाधार भू गिरी पद्याकरी ॥ नैन झरे नेति सीरी श्वास हा समेति सीरी तन मन चेत चीरी विरति अचाकरी। हा हा बिनयी ललन ऐसोहो कठोर मन मिल चितचोर मोर लै गयो सटाकरी ॥

चौ० मैं जब जात हुती कैलासा। विद्या पढ़न शंभु के पासा ॥
अस बर पार्व्वती मुहिं दीया। स्वप्न मध्य मिलिहै तोहिं पीया॥
तै ढुँढ़ाय लीजै पति अपन्यहि। सोइवरआजमिलो मुहिंस्वप्नहि ॥
सखि सो क्यहिविधि पीयढुढ़ाऊं। जनौं न नाउँ ठाउँ कहँ जाऊं॥
खगि अपक्ष अति भागनहीनी। विधिहि हरै दुख निशामलीनी॥
हूं पिकि स्वाति बुंद अधिकारी। पैऋतु गे कहँ मिलहि स्वधारी ॥
है गति मोरिहि मोर समाना। निरतचरण लखि रोदतनाना ॥
सरोवरी पिय सलिल विहीना। बिनुजलकहुं दिगथिरै न मीना॥
हौं चंपा सुगंधि रस भीनी। पैअलिनिकट नआवत चीन्ही ॥
हूं दिनपै बरषाऋतु केरा। जहँ अनुचित रवि दरश उजेरा॥
ऐस प्रतापी पितु की बेटी। मोसम नहिं कोउ कर्मन हेटी ॥
तो बिनु कोउ सहाय नहिं मोरा। जो कछु है भरोस सोतोरा ॥

दो० जो उपाय कछु करसकै पीउ मिलन के काज।
तौ इतनौ एसान कर नहिं अति होत अकाज॥

सो० बिनु अवलोके पीउ हौं न जियब जिय जब गई।
करत रुची नित जीउ खाय मरूं गरलै भखूं॥

स० अब काहि कहूँ अपने मनकी जु लगी जिय चोट चुटीलिखरी।

उर आह कि दाह प्रवाह बढ़ी दिन दून निशा चउगून अरी ॥
हिय खटकत मूरति मोहनियां नँद को ललनै बिसरै न घरी।
निंदिया बिसरी बिरहा दुखरी तन मैन बिथा सबसों अगरी ॥
चौ०असबचकहिपुनिप्रियमुरझाई। दृगभरिबारिअधिकअकुलाई॥

चित्रलेखाउवाच ॥

लखि लेखा ऊषहि बेहाला। दादस दै उचरी ततकाला॥
तैं न चिन्त चिन्ता कछु गोरी। कह यह कारज कठिन बहोरी॥
हौं सब शीघ्र काज तुव करिहौं। यकछिन महँ दलदुख परिहरिहौं॥
तोर बलाइ करै अस सोचू। दुर कर हियको सब संकोचू॥
जहँ पति तोर होय गो गोरी। तहँहिं जाइ लाऊँ त्यहि कोरी॥
मुहिं समर्थ तिहुं लोक सिधाऊं। खोज लगाइ अशन तब पाऊँ॥
दे बताइ वाको मुहिं नामा। कर आज्ञा गमनौं वहि ठामा॥

ऊषाउवाच ॥

विहँसि विलोक सुहृद मुखओरी। ऊषा उचरि मसल वह तोरी॥
सर्व्वकथा सुनि पुनि अस भाने। देव दनुज को ताहि बखाने॥
नाम ग्राम कछु जानत होती। तौ कह हानि नींद सुखसोती॥
हो कोउ छली पूर्व्व को घाती। सोइ तजिगो मुहिं बनै सँगाती॥
दो० अरी बीर वे पीर की माती अधिक अधीर।
बिध्यो बिरह को तीर अस गयो करेजो चीर॥
सो० यह दुख अमित अथाह कहँ लगि गाय सुनाइये।
तैं करु अब कछु राह मीत मिलै आनँद पुरै॥

छंदत्रिभंगी॥

तैं अतिस्यानी बहुगुणसानी छलबल खानी रूपजगी।
विधि बरदानी सुयश निसानी हित सुखदानी मोर सगी॥

यह सब समुझ काज कछु कीजै। नहिं अबमोहिं मरन भलदीजै॥

चित्रलेखाउवाच॥

दो० चतुर चांगली चुल बुली चमकुल छल बलकार।
हँसि उचरी किमु लाड़िली धारत सोंच बिचार॥

सो० डरप न कछु जिय बीच सावधान हो थिर गहै।
धीर नीर हिय सींच देखौ तो कह विधि करै॥

क० ललना अजानरी नदानरी न बावरी हुं जानत जहान रीति नीति हुसियारी हूं। दासी हूं सदाही की मैं तोर तो थलाही की मैं जन्मी हूं यहांही की मैं तोरि दरबारी हूं॥ तैं किमु बियोग रोग सोम को करै संयोग चलु उठ न्हाय भोग भोजन विहारी हूं। तो मलीनता निहार पूंछि हैं सो नरनारि तौ पतिजैहै उघार या बिच मैं आरीहूं॥

चौ० चुप चुपात है बैठु निहाला। मटक मैल मनहोइ न बाला॥
हरि प्रताप सों तो पति प्यारी। लाय मिलावत मैं यहि बारी॥
जितक बचन मैं दै तुहिं हारी। सो सब करब न समुझ बृथारी॥
चहि तनरहे जाइ जिय मोरा। निजुप्रण तजब न कर बरजोरा॥
यहि प्रकार प्रिय धीर बँधाई। बेष हेतु बहु बस्तु लियाई॥
श्यामनाम अंकित पट धारे। गोपि चँदन तन छाप छजारे॥
ऊर्द्ध पुंड्र धर तिलक सुभाला। कलगलभल तुलसीफुलमाला॥
तुलसी हरि सुमिरनि गहि पानू। लै पुस्तक गीता भगवानू॥
आसन मेलि कांख बिच दावा। परम बैष्णवी बेष बनावा॥
करि प्रणाम ऊषा प्रति पोषा। बहु समझाय दीन्ह सन्तोषा॥

अथचित्रलेखारूप द्वारिकापुरी गमनम्॥

लै आज्ञा उठाय बीरा को। गुरु मनाइ चलभइ द्वाराको॥

माया विरचि अपूर्व अपारा। बायु बाज पै ह्वै असवारा॥
दो० निशि अँधेरि घनश्याम बिच जाय अलोपी बाम।
चपलासी चमकत भई पहुँचि द्वारिकाधाम॥

अथ चित्रलेखा द्वारिकापुरी प्राप्तः पुनःअनिरुद्ध
सपरियंकऊषापुरीगमनम्॥

सो० हरि मन्दिर चलिजाइ छली छिपानी चुलबुली।
दबे पगन गतलाह जात न जानी जन कोऊ॥

छंदगीता॥

अनिरुद्ध जहँ परियंकअंकित घोर नींदालस भरे।
रहे निरख स्वप्न मँझार ऊषा संग करत बिहाररे॥
तहँ चित्रकरा पधार अवसर धार युति परयंक के।
हरिपौत्र लीन्हउठाय नभमग चली पुरबिनु शंकके॥

चित्रलेखा सानिरुद्ध ऊषा पुरी प्राप्तः॥

छिन माहिं प्रियढिगजाय पियसौंपाय जिय दुख परिहरे।
लखि कठिन कौतुक बालको हक पक रही श्रुतिकरधरे॥

ऊषाउवाच॥

पति पेखि सुख बिनु लेख मुदित बिशेष सखि चरननपरी।
कहि धन्य साहस धन पराक्रम धन्य तुव छल सुंदरी॥
मम हेत सहि दुख नेति पलँग समेत पियमुहिंलादियो।
असललन हेतहु करब जनि कोउ काजजस मम तैंकियो॥
चौ० तुव येसान जन्म नहिं धोई। ऋणियां उऋण कबहुं नहिं होई॥
पै धन आज सोवरण घरियां। कुशलक्षेम तुहिबीर निहरियां॥
ऐस कराल कठिन ठहँ धाई। जहँ कोउ हितू न सगो सहाई॥
कोटिनसुखतुहिं मिलतसूजायउ। तुवसहेलि यशजात न गायउ॥

तैं न होति मम तीर सुजाना। विनशिजाततौ तबहिं न प्राना॥
तोर सीख ममप्राण बचाये। प्राण पती के दरश दिखाये॥
जो कछु सेवा टहल बतैये। सो सब करहुं तोरि बलिजैये॥
मोहित तो तैं अस श्रम कीन्हा। प्राण हथेलि प्राणधर लीन्हा॥
तोसमहित मन पितहुन करिहै। पर दुख कौन शीश पै धरिहै॥
तोसि तुही जग अपर न होई। तो सम कृत करसकत न कोई॥
अबलौं नहिं हौं तोहिं परेखा। जस तैं परम सुजान अलेखा॥
तोरे गुणन केरि बलिहारी। खोज्यहुमिलहिं न तोसिसुखारी॥

चित्रलेखाउवाच॥

दो० सुनि ऊषा के अमिय बच विहँसि चित्रलेखाहु।
बोली हौं केहि योगप्रिय जो तैं इतक सराहु॥
सो० परहित चतुर निदान अग्नि उदधि गिरतनदहैं।
मैं कहकीन्ह सुजान मानरही एसान अस॥
दो० यहकाया क्यहिकामकी जो क्यहुकाज न लाग।
तैं तो ममजीवनप्रिया तोसनकह कछु त्याग॥
सो० जीवन तुच्छ संसार अमर कौन भा जन्म जग।
सारयही व्यवहार परमारथ लघुता दया॥

मंदछंद॥

परहित संता मुनीमहंता साधु अनंता प्यारी।
तन दै डारैं कबहुँ न हारैं परसुख सारैहारी॥
परहित हरिजन करहिं उपरजन राखहिं गरजन असअस।
लखशिबि हाला दधिच भुवाला सहब कसाला कसकस॥
परहित देवा सहजहि सेवा दे सुखमेवा गाता।
निरखु सुजाना श्रीहनुमाना जासु निदानाख्याता॥

परहित करता जग तनधरता जन दुखहरता ललना।
हौं क्यहिलायक अधम अपायक छलबलकायक भलना॥
चौ० मो प्रणपति राखी भगवाना। जो तुव मनसा पुरी सुजाना॥
अब अपनो पति समकु दुलारी। दे आज्ञा गृह जाउँ सिधारी॥
जगइ कंत हिय आश पुरैये। बिरह मदन बेदना दुरैये॥
मन मनोर्थ कीजै मनमाने। युगलहितू चिरजियों सयाने॥
दे आशिष गृह गई चितेरी। परम मुदित ऊषा मनमेरी॥
सज शृँगार सोहने मोहने। पलिकातट पति गइश्र जोहने॥
प्रथम मिलन की सकुचनि बंका। लाजराजि हिम किंचितशंका॥
कहनु चहतु कछु रसबच कोही। पै सक रहत कहा बिरचोंही॥
मन मन कहि पियकैस जगाऊं। चितचोरै कस कंठ लगाऊं॥
मन मनोर्थ लहि कस सुखपाऊं। मैन बिरहदह कस बिनशाऊं॥
सोच समुझ पुनि चतुर सयानी। गहिबीणा शिवप्रिय बरदानी॥
मधुर २ स्वर लगी बजावन। ब्योगी राग बिहाग सुनावन॥
दो० सुनि सुरीलि धुनि यंत्र की श्रीहरि पौत्र प्रवीन।
जगे पेखि परगृह चक्रित हौं ह्याँ कहँ आसीन॥
सो० बड़ अचरज की बात कस माया है दैव यह।
मोसन कहिय न जात कोजन मुहिं लायोयहाँ॥
स० कौन क धाम सुधाम बन्यो यह कौन कि नाम सुबाम सुहाई।
बीणा बिहारिनि शारद है धहुँ शंभु प्रिया कर यंत्र जुहाई॥
स्वप्न लखौं धहुँहै ललनैपन जान परै न उपाय कहाई।
द्वारहि है नगरी धहुँ आन अजान भयो बिसरी चतुराई॥
चौ० इत अनिरुद्ध करैं अस सोचा। उतऊषहिं पियमिलन सकोचा॥
जगेउजान पति बीण बिहाई। ह्वै गइ ठाढ़ बाढ़ हितआई॥

इकटक नैन दृष्टि छक रहही। मनुचकोरशशिमुख सुखलहही॥

श्री अनिरुद्धउवाच॥

निरखि सुंदरी रूप निधाना। सावधान है अस प्रभु माना॥
तैं प्रिय को मन हरन अपारी। क्यहिमिसआन मोर ढिगठारी॥
का तुहिं मुहिं ल्याई यह धामा। यहअचरज कस बतहुललामा॥
सुनिप्रियपियबच लाजलजीली। औरहुँ सकुचगई सकुचीली॥
आदि मिलन भवसक गरभीली। भीत कोन गइ लाग लगीली॥
मुख मुसिक्यान मोद मन माहीं। हियअकुलान ध्यान पियपाहीं॥
सब कुछ अतन बिरह शर लागे। पै न लाज बश आवति आगे॥
झूठ सांच हित दुरै न भाई। सत हित रतिब्रत प्रगट जनाई॥
प्रेमै बश लै प्रभु अवतारा। जन मन रंज हरैं भव भारा॥

दो० स्वै लखि सजन सनेह प्रिय श्री प्रद्युम्न कुमार।
भइ प्रतीति उर प्रीति पुनि मिलन चाह बढ़वार॥

सो० धर न सक्यो मन धीर तज पलका अकुलायउठ।
धाय धरो कर चीर दै गर कर पर्यंक लइ॥

स० सोच सकोच हरो हियको भयपार प्रमोद सनेह कि बातें।
सेज सने सुखसार द्वऊ मिलहाव सुभाव कटाक्ष कलातें॥
प्रेम प्रवाह बिहार वह्यू निज जो मन आस बिलास पुरातें।
दंपतिश्रीललनेश प्रभा लखि नीरददामिनि दोउ लजातें॥

क० कर पिय प्यारी अस बिपुल बिहारी तन मन बलिहारी वारि जायँ अँग भरके। अधर अमीलेहु कपोल सरसीले मुख चुम्बत छबीले रूपसागर सुघरके॥ गहि गलबाहीं हित निरख सराहीं मनमाहीं सुखछाहीं छाई युगल कुवँरके। ललन लड़ैती जोरी चोरत चितन चोरी भोरी भोरी बतियाँ बिरचि हँसिकरके॥

श्री अनिरुद्धोवाच॥

चौ०प्रिय सुहाइ बशलाइ आपने। बिहँसि प्रश्नकी श्री अनिरुधने॥
तैं मुहिं कहँ कसलख प्रियपावा। कस ममपुर ते बुलय मँगावा॥
यह कृत भनमम भ्रमहि नशैये। बड़ अचरज बच मोहिं सुनैये॥
अब न भेद कछु तन मन लैये। जनि सकुचै कृत सत समुझैये॥
धनि प्रवीण तव परमचातुरी। परचि तोहिं सबगुणनआगुरी॥
कासु सुता तैं कासु सहेली। को पुर यह किनकेरि हवेली॥
मोर धाम ह्यां ते कित दूरा। नीरधकी हद बेहद भूरा॥
सुन पियके प्रिय प्रियबच ऊषा। आकुलता अंकुरित अदूषा॥

ऊषा उवाच॥

मृदु रसबतियन रसबश गोरी। पतिमुखलखिबिहँसीभनभोरी॥
हे अभिन्न प्रियवर मम प्राना। मोरभाग्यतुहिं मिलयउआना॥
क्यहि को लावै को कहँ जावै। पूर्व्व सँयोग सुआनमिलावै॥
पै मैं सकल व्यवस्था जोई। तुमप्रति बरणि सुनावतसोई॥
दो० शोणितपुर यह सहसभुज नृपममपितु बलवान।
बाणासुर कोउ कोउ कहैं असुरन केर प्रधान॥
सो० जबहौं रही कुमारि वाराणसी समीप शिव।
पितुमोहिं दई पधारि विद्याध्येन करावने॥

नटछन्द॥

पढ़चुकी जबहिं मैं पीउ। भे मुदित उमापति शीउ॥
यक्कदिना मोहिं बरदीन। हिमवान सुता परबीन॥
पति मिलहिस्वप्नमें तोर। तैं लिजै ढुराइ वहोर॥
स्वै बरफल आजु परेखु। भरि नैनन तुमका देखु॥
अबपिता पुनक यहधाम। मुहिंदीन यहां विश्राम॥

लैचन्दसखी मिलवारि। तुम मिलबे बिना दुखारि॥
ह्यां कियो निवासप्रमान। बहुखल रखवारक प्रान॥
कल रजनीभा असहाल। रहिसोवत सेज बिहाल॥
सपनेबिचतुमहिं बिलोक। अतिबाढ़्योममहियशोक॥
यक हितूसखी ममभारि। बहुगुण छलछन्दअगारि॥
त्यहिलाइ मिलायो तोहिं। बहुदीनिसिआनँदमोहिं॥
ही ललनपने की लाग। तव मिलेदरश बश भाग॥

चौ० अहो प्राणपति परम कृपाला। तुममगृह वासेहुज्यहिकाला॥
लखितुममोहिंजियकहअनुमाना। है प्रसन्न मोहिं भनहुसुजाना॥
अकथनीय यह बात बहूता। कहि न बनै बुध होत अबूता॥
द्वाराते ममपुर लग आयउ। पै न तुमन वायुहू जगायउ॥
उदधि उदण्ड मार्ग अतिघोरा। विहर बिहानेउ त्यहि यहछोरा॥
सघन अरण्य तरुन हहरावन। तहुं न नींद निंदरायो नैनन॥
कछु न कछू विहरन मग माहीं। डगमगानु होगो पलँगाहीं॥
पट फहरान गहिय तन होगी। तहुं न जगेउ ममभाग सँयोगी॥
करवट अदलि बदलि धौं नाहीं। कस अचेत आयउ यह ठाहीं॥
निशा पंछि वच विरचनवारे। तिनहुंवचन तवश्रुति न अधारे॥
विलसित तन इतरादि सुगन्धी। रहिय वदन समीर सम्बन्धी॥
त्यहु सुवासजनि तुम न जगावा। यहि आश्चर्य मोर मन छावा॥

श्रीअनिरुद्धोवाच॥

दो० भनेहु सांच तैं सकल प्रिय मैं भा असहि अचेतु।
नेकु न जानी गमनगति त्यागत अपन निकेतु॥

सो० पूर्वकही सम्बन्ध मोर तोर कछु हो प्रिया।
तब तु भई मतिअन्ध और कहा तोसन कहूं॥

वीरछन्द ॥

कह कहूं अनोखी बात। कही नहिं जात॥ सोरहा रात। सुखी अतिगात॥ पड़ा पलकापै॥ होरही निशा घनघोर। नींद अतिजोर॥ न सुध मन मोर। स्वप्नमें तोर॥ दरश झलकापै॥ मनमोहन सोहन नूर। तेरा भरपूर॥ किया मन चूर। वचन रसमूर॥ सुना मन लीया॥ होगया बड़ा बेहोस। रह्यो नहिं होस॥ अती अफसोस। नींद खामोस॥ होगई भीया॥ यह हाल रहा अबतलक। खुली नहिं पलक॥ पहुंचा जब तलक। तोर गृह बलक॥ बीन सुन जागा॥ नँदललन सोंह जब जगा। आन गृह लगा॥ देख यह ठगा। भई कह दगा॥ कहन मन लागा॥ तुहिं पेखि यन्त्रवत वाम। रूपकी धाम॥ रहा जिय थाम। करूं क्या काम॥ विरह नहिं माना॥ तब उठा छोंड़ परयङ्क। लिया तुहिं अङ्क॥ गया तब शङ्क। न दिया कलङ्क॥ तुहू हित ठाना॥

चौ० युगलहितूकरिअसरसबातियां। बिरहदहनदहिजुड़ईछतियां॥
कामकलोल लोल बहुभाँती। करिविहार बिहई सुखराती॥
सुखद यामिनी जात न जानी। जलजमाल प्रियउर सियरानी॥
दीपहु ज्योति लखी मलिनाई। तब तो प्रिय उठ बाहर आई॥
लख्यो कहा भा भ्यान अकाशा। चहकरहे चहुँदिश खगराशा॥
चंद मंद उडुगण द्युति नाशी। पूर्वदिशा अरुणता प्रकाशी॥
पुष्कर कुमुद लगे कुम्हलावन। कमलप्रफुल्लितभयउ सुहावन॥
भा सँयोग सुख चकवा चकई। बांगहिं तमचुर मुला गुहरई॥
मग बंटोहिया विरहन लागे। नगरनिवासी जन चहुँजागे॥
इमि विलोकतहि राजकुमारी। उलट परी गृहमूंद किवारी॥
पिय अकुलाय धाय उर लाई। इत दिनेश भा प्रकट जनाई॥

दै गलबांह नाह हित सानी। लैगइ रंगमहल पतिस्यानी॥

दो० तहँ प्रीतम को बासदै सखियन सकल दुराइ।
निशिदिन पिय सेवाकरै मनवच कृत चितलाय॥

सो० दम्पति रसिक किशोर सुखयुतविहरैं अहर निश।
यहि विधिगे दिन थोर सखिन भेद जान्योसकल॥

क० इश्क और मुश्क कहूं खांसीहू छिपै है खुश्क लगी सो लुकाय नाहिं कोटहु लुकाइये। बातन में घातन में बोल बतरावन में बिहँस विलोकन में कहां लौं छिपाइये॥ जापै जो बिरहराजकी कदापि परै गाज सो तो ना दुरात बात कोटिहुबनाइये। अष्ट याम साथी जो सँगाती दिनराती जौन भेदराख ललनपनोही जतराइये॥

स०जानिलियो सखियां नृपसों पइ भानसकैं नहिं राजसुता भय।
दूज सलोनिहि सूरत पीव कि पेख सुहायू हिये ममता लय॥
तीज प्रियासन लाभ सबै धन धाम भरे पट व्यंजन सों दय।
है सुखदा मित प्रीतिललन् प्रिय मानसुमान खुशी सबहीकय॥

चौ०प्रियहु जची गईं जान सहेली। तबतु शङ्क दइ त्याजनवेली॥
सनमुख सखिन संग पिय केलै। यहिविधिनितसुखभोग समेलै॥

इति श्रीशुकदेवपरीक्षितसंबादेपण्डितललनपियाविरचित
अनिरुद्धपरिणयकथापूर्वार्द्धसम्पूर्णम्॥

अथ ऊषास्वयम्बरोत्तरार्द्धकथा प्रारभ्यते ॥

अथ ऊषासमीप बाणावति गमनम् ॥

चौपाई ॥

यकदिन सुता विलोकन हेतू । बाण प्रियागइ उषा निकेतू ॥
तहां जाइ अस चरित निहारा । तनया मनमथ मातिअपारा ॥
लिये संग कोउ राजकुमारा । चौसर खेलरही चौवारा ॥
देखि दुहुँन की पूरण प्रीती । आशिषविरचिजननि बहुरीती ॥
उलट गई गृह उलटे पाइन । कोउनलखोयहभेदसिपाहिन ॥
लखि अनिरुधकी मोहनि मूरत । बाणावतिबिसरहि नहिंसूरत ॥
करै मनै मनमाहिं अँदेशा । किमिकुमारियहामिल्योसुखेशा ॥
को कुमार कहँकेर निवासी । कस आयउ ममतनयापासी ॥
अहो देवकुल करिय सहाया । मिलै सुतहियहिकंत सुहाया ॥
ममाभिलाषहि पूरण कीजै । मोरसुता हित आनँद दीजै ॥

दो० सुखयुत किंचितकालगे प्रिय सोची मनमाहिं ।
बहुदिनते जननी जनक सनहौं भेंटी नाहिं ॥

सो० चरचै कहुँ जनि तात धौं कोउ निश्चर चरित यह ।
यासों काल प्रभात चलि जननिहि पितु परसिये ॥

रामछन्द ॥

सोवत पीयां परख्यो प्रीया जोइ । सजिशृंगारा पुनिवहिवारा सोइ ॥ १ ॥ मिलन पितैको चली घरैको बेग । पतिबिछुरन कै लगी मदनकै तेग ॥ २ ॥ स्वैफिरिआई पटउरभाई हाल । पिय उरलाई मौजमनाई बाल ॥ ३ ॥ लखिरखवारे यहकृतसारे सो-च । कह्यो परस्पर यहअचरज वर पोच ॥ ४ ॥ बहुदिनवीते प्रिय

बखरीते गौन। फिरिगृहबासी विकलकलासी तौन ॥ ५॥ सुन-त्यहिबाँचा किंकरजाँचा एक । पुनिस्वैभाना सुनहुसुजाना नेक ॥ ६ ॥ कइदिनसेती हौंलखिएती बात । ऊषाकेघर बिलसत यकनर ख्यात ॥ ७ ॥ खेलतचौंसर कबहुँपलँगपर रूढ़ । मेलतकरगर कबहुँबिहँसिकर गूढ़ ॥ ८ ॥ सुनि यकदूता बिलखि बहूता भानि । जोअसहाला कहहुभुआला कानि ॥ ६ ॥ नहिं पुनिकुशला भूपति रुशला घोर। तौ बिनुकाजा जाइबलाजा तोर ॥ १० ॥ तबयकदासा बचनप्रकाशा भार । कछुमतबोलो मनबिचतोलो तार ॥ ११ ॥ राजसुताकृत जोतुमउचरित ताय। भलीबुरीहो पुनि कैसीहो हाय॥ १२ ॥ जो हुनहारा मिटैनवारा जानु । जोकछुकहिये ललन कहइये मानु ॥ १३ ॥

अथ बाणासुरस्योषामन्दिरागमनम् ॥

भनरहेचाकर स्वैबाणाखल लीन्ह । ओहिसमयमहँ आइ सुता गृहचीन्ह ॥ १४॥ शंभुपताका निरखि न थाका बीर। रुष्ट उचारा खलनगुहारा फीर॥ १५ ॥

बाणासुरोवाच ॥

ध्वजा कहांगइ क्यहुन छोरिलइ काह। बेगि बतावहु बार न लावहु ॥ वाह ॥ १६ ॥

द्वारपालोवाच ॥

चौ० द्वारपाल सुन भूपति बैना। उतर दीन्ह यहि बिधि खलसैना ॥
बहु दिन भे गिर गई पताका। सुनिखलबच रहिगयोअचाका ॥

बाणासुरोवाच ॥

को को चेरि मोर तन पाकी। नशत वैरषी तुमहुँ न ताकी ॥
लाल लाल दृग ज्वै नृप कीन्हे। निश्चर निकर भये मन हीने ॥

दनुजोवाच॥

तिन महँ बोल उठो यक दुष्टा। कछु मन नृप तेहि चाहत तुष्टा॥
जो पराध मम करिय क्षमापन। तौ कछु वरणि सुनाऊं तुमसन॥

बाणासुरोवाच॥

भन्यो बाण का कहहु सुनाई। विसमय विहै सकोच विहाई॥

निश्चरोवाच॥

महाराज द्वैत्रै दिन सेती। हौं यह लखत ब्यवस्था एती॥
तुव तनया गृह परम सुहावा। कोउ यक युवा पुरुष है आवा॥
द्योस निशा बतरात बिहारत। निर्भय निपट शंक नहिंधारत॥
अरु न भेद कछु हौं लखिपायो। को क्यहि पुरबासी कसआयो॥
सुन किंकर वच मान प्रमाणा। भयो महाक्रोधित नृपबाणा॥
दो० गहि कृपाण गा दबे पगु निज कुमारि के भौन।
निरखि युगल सो गज रदन दै अँगुरी भा मौन॥
सो० श्याम वरण पटपीत रूप उदधि बर नवल तन।
बाणु हनन मनचीत बहुरि समुझ मनअसभन्यो॥

हरिगीतछन्द॥

सोवत करहुं बध होइ अघ पुनि बीरता मोरी कहा।
धनि शंभु मम रिपु भौन बैठे भेज ह्यां दीन्हो अहा॥

बाणासुरोवाच॥

धरिधीर बली गँभीर निश्चर बोल यह आयुष बरा।
ज्यहिसमययह जनजगैत्यहिछिन खबरममकरियोधरा॥
इमि उचर आलय आय सभाजुराइ दनुजन सों कहो।
ममरिपू पहुंच्योआनि लैदल अस्त्र शस्त्र न करगहो॥
चहुं ओर ते ममसुता मंदिर जायकै घेरिय बली।

तुम चलहु पाछेहि आयहौं त्यहिं देखिहौं कैसोछली ॥
नृप पाइ आयुष जाइ घेरो दानवन ऊषा थलै।
इत जगे प्रद्युम्नहु ललन प्रिय बिहरहीं सुखसखिनलै ॥

चौ० कहुंप्रियदृष्टिपरीनभऔचक। कइ देख्यो गन छये बलाहक ॥
घिरो तिमिर तीक्षण चहुँ ओरा। दमक रही दामिनि अतिघोरा ॥
शिख शुक दादुर बका कलोलैं। कल कपोत चक चात्रिकबोलैं॥
सुनिपपिहा पिय पिय ध्वनिकोरी। उमँग उठी प्रिय हियाघनोरी ॥
जिनको सजन विदेश बसै हैं। तिनहिं मनोभव विरह दहै हैं ॥
जिनको पिय समीप दिन रैना। तिनको कसन सतावहिं मैना ॥
ज्यों ज्यों पिक पिय वच उपचारै। त्यों प्रिय पियअँगलै सुखसारै ॥
यहिविधि दंपति करहिंकलोला। सुख संपन्नित चांगल चोला ॥

बाणासुरसमीपे एकासुरागमनम् ॥

जागे जाहिं दोउ सोइ एकदानो। बाण समीप जाइ कृत मानो ॥
सुन बाणासुर जागा बैरी। लै आयुधन क्रुद्ध अतिशैरी ॥

अथ बाणासुरस्योषामंदिरागमन पुनरुवाच ॥

चौ० चलि आवा ऊषाकी ओरी। अनिरुद्धै लखि कुवच कहोरी ॥
रे धमको तैं तन घन बरना। कंज नैन अँग पीत उपरना ॥
मम जीवत मम तनया पासी। निलज निशंक उपावतहासी ॥
जानत नहिं प्रताप शठ मोरा। विदितवंत जहँलगि महिछोरा ॥

दो० बहु दिन चोर चुराइ रह अब गृह बाहर आउ।
यहि कृपाण धनु बान सन तुहिं नाशौं दै घाउ ॥

सो० अब न कुशल तव प्रान बधेबिना जनि छाँरिहौं।
सुन ऊषा अकुलान दृग झर गदगद बैनभइ ॥

अथ ऊषा विलाप ॥

पद सावनी सहाना ॥

बड़ दुख सों मैंने पायारी सैयां। पित मोरा बधने को आया री सैयां॥ अन्तरा ॥ हुआ रोम मैला जो मोरे बलमका। तौ खाके जहर मैं मरूंगी गुसैयां॥ १ ॥ उगा कौन बैरी मेरा जगमें ऐसा। कि जिसको मेरा सुख तनक ना सुहैयां॥ २ ॥ उधर देव दानव दल घरको घेरे। इधर बैरी बाबुल कठिन रोष लैयां॥ ३ ॥ अबहै लाज मेरी तेरे हाथ स्वामी। तेरी बिन मेहर के कोई सुख न पैयां॥४॥ ललन मेरा है पी निबाहोगे तुमहीं। उबारोगे चेरी तुम्हीं गहि के बैयां॥ ५ ॥

चौ०मनमलीन प्रिय चितबिनु चैना॥ऊर्ध्व श्वास भरि विरचिसबैना॥

श्रीअनिरुद्धोवाच ॥

तबहिं कोप प्रद्युम्न कुमारा। दै प्रिय धीर वाक्य इमिसारा॥
जनि उदास हो प्रिय मनमाही। देखो को करवट उँटयाही॥
यह गीदर गन राक्षस जेते। मारि बिनाशहुं छिनमहँ तेते॥

अथ श्रीअनिरुद्धरणारूढाकृति वर्णन ॥

अस कहि महर उठेउ हरिपोता। महाकराल बली खल खोता॥
पढ़ श्रुति मंत्र बीर उहिबारी। लइ यक भूधर शिला उखारी॥
यक सत अष्ट हस्त अनुमाना। त्यहिलै बिपुल बीर रणठाना॥

अथ बाणासुरसमरोपस्थित वृत्तांत वर्णन ॥

लखिअनिरुद्ध बिपुलबलियोधा। बाणहुं आन भिरोकरिक्रोधा॥
धनुष चढ़ाय बाण संधाना। बरसावन झरि लग्यो थहाना॥
खल कुल कटक आन अस टूटा। मनु मधुपै ममाखिगन छूटा॥
अपन अपन प्रहार सब लायउ। अस्त्र शस्त्र बहुविबिध चलायउ॥

तब सकोप अनिरुद्ध बलीशा। शिलहि प्रहार मार दलमीशा ॥

दो० यकयक घात अगाथबिच सहस्रन असुरविदार।
मारि मारि महि डारदै भरगइ भूमिभगार॥

सो० कछु बिनशे अकुलाय कछु घायल ह्वै महि परे।
बिलखहिंभनबचहाय धरणिदहलि खलबलमच्यो॥

अथ निश्चरनिकर प्रति बाणोवाच॥

ततःदनुजास्त्रजात्यानुमान संख्या वर्णन॥

स० लखु बीरबली मणि घोरकरा मन बाणु बिहाल भयोअपरा।
खल वृन्द गुहार पुकार खरा रण काज त्रिराज बहोरिअरा॥
बहु ढाल गदा तलवार धरा गहि तीर कमान तुपक्क भरा।
ललनाहु जना न निदान जरा रण धामहि धाय करै समरा॥

चौ० बहु बंदूक तमंचहु नेजा। खड़ग पाट नीमिचा सहेजा॥
कोउ लै बांकु बिछूह भुजाली। बल्लम बाना रहेउ उछाली॥
कोउ कर खांड़ा चक्र गँड़ासा। छुर छुरी अस्तुरनु निवासा॥
दस्ताना नाराच उठावैं। वहल छुरक अरु शक्ति चलावैं॥
बख्तर तोमर तबल कटारा। लै बरछी संगीन कुठारा॥
भूला भकम भकोर भुलावैं। कोउ मूसल लै सनमुख धावैं॥
भिंदिपाल पट्टिश तिरशूली। गहि खट्वांग पाशहल शूली॥
सैफ भुशुंडी शारँग धारैं। मार मार कर घात प्रहारैं॥
कोउ मायाकरि नभ बिलगाहीं। समरकला बहुभांति सृजाहीं॥
अस खलदलछलबललखिबाना। असुरायुधलैपुनि अभिमाना॥
समर मँझार धाय धस बीरा। करनलग्यो रण बिपुलगँभीरा॥
असुर कृती लखि तब अनिरुद्धा। लै पषाणशिलअतिहियक्रुद्धा॥

दो० ज्यहि दिशि शिला घुमायप्रभु मारैं कठिनकठोर।

शक्र वज्र मनु मारहीं जाय करेजनु तोर॥
सो० शीशअधरभुजबाहिं ज्यहिअँगशिलापरै उछरि।
टूटैंजंघ कराहिं भगहिं कछू रहिजायँ मरि॥

छन्दलावनी॥

रहि गया अकेला बाना। सब दानव कटक जुझाना॥
भयो अचरज परम दुखारी। मन शोच्यो बारंबारी॥
लखि अजित महारण धारी। तब नागफांस लैडारी॥

शैर॥

फांस अनिरुद्ध को बाण ने बिठाला घरमैं।
नहीं बलवान कृष्णपौत्र को जाना मरमैं॥
चहें तो छिन में सर्पफांस को लेकर करमैं।
फेंक दें तोड़ तड़ाका करैं खल यक शरमैं॥

टूट॥

रहे प्रभु मर्यादा धारी। मान ब्रह्माका रखा भारी॥

उड़ान॥

फँस गये अपन बुधवाना। सब दानवकटक जुझाना॥१॥
बाणासुर कोपि कठोरा। लखिश्रीअनिरुधकीओरा॥
कहरे शठ कहुरे छोरा। अब कौन सहायक तोरा॥

शैर॥

होइ जो कोई सहायक तौ उसे बोल मँगा।
पाती में लिख सँदेश उसको जो होइ तेरा सगा॥
नहीं तो तेरी मौत का अब आ किनारा लगा।
घड़ी दो एकका महिमान अब बचे न भगा॥

टूट॥

तेरा जी जाने वाला है। पड़ा मुशकिलसे पाला है॥

उड़ान॥

तोरा अन्तकाल नियराना। सबदानव कटक जुझाना २॥
सुन कटुक वचन बाण के। हिय बेधिगयो ऊषा के॥

अथ चित्रलेखासमीपे ऊषाया आगमनं वचनंच॥

तट जाइ चित्रलेखा के। प्रियबिलखि कह्यो दुखगाके॥

शैर॥

ऐसा धिक्कार है जीवत न मौत आती है।
प्यारे को देख फँसा फांस फटे छाती है॥
बैरी बाबुल को मेरे जाके न समझाती है।
मुझे पीतम की जुदाई ये डसे खाती है॥

टूट॥

गया खाना पीना सोना। छुटगया जब से पी सलोना॥

उड़ान॥

सखि बचन न मोर पिराना। सब दानवकटक जुझाना ३॥
अबकर कोउ यतन दुलारी। कस मिलहि पियामुहिंप्यारी॥
तेरोहि बल भरोस भारी। तुहिं मोर बिपति नित टारी॥

शैर॥

तेरीहि मदतसे पिय पाया मैंने।
तेरीहि मेहर से सुख उठाया मैंने॥
तेरे जौहर को देखजी को दृढ़ाया मैंने।
झूठी तारीफ़ का क़िस्सा न सुनाया मैंने॥

टूट॥

तुझे है सब समर्थ आली। सकल छल बल मायावाली॥

उड़ान॥

सुखसागरि परम सुजाना। सब दानवकटक जुझाना ४॥

चित्रलेखोवाच॥

प्रियजनि जिय लाउ उदासी। तुवपति शशि पूरणमासी॥
ये खल खद्योत चौमासी। रवि सम कहुँ दीप प्रकासी॥

शैर॥

तेरे बलवान पिया का कोई कुछ करसक्ता।
बाण अनजान कुवच नाहकि बक्का झक्का॥
धीर धारे वही सुख प्रेम का प्याला छक्का।
कहीं फल पेड़ से गिरता नहीं जबतक पक्का॥

टूट॥

हुआक्या अभीदेख सुकुमारि। डरेजानि तनु मन हिम्मत धारि॥

उड़ान॥

एरी मेरी प्रिय कछु घबराना। सब दानवकटक जुझाना ५॥
रहु तैं निचिन्त मनमाहीं। अभि श्रीहरि जानो नाहीं॥
बलराम कहूँ सुनि पाहीं। यदुबंशिन लाइ जुझाहीं॥

शैर॥

जब के आके यहां ब्रजराज करैंगे डेरा।
छिन में दानव का दल न एक पड़ैगा हेरा॥
सामना करसके है कौन जग में उनकेरा।
कौन ऐसा बली छली जिसे न उन गेरा॥

टूट॥

कहा बाणासुर बीर महान। कोइ नहिं जगमें उनहिंसमान॥

उड़ान॥

मैं कहूं सो मान प्रमाना। सब दानवकटक जुझाना ६॥
सहस्राभुज बेगि हरैहैं। पिय फांस सों तोर छुड़ैहैं॥
जो जो खल ग्रान जुझैहैं। तिनको सुरलोक पठैहैं॥

शैर॥

उनकी येही है रीत नीत सनातन प्यारी।
जहां जिस भूप की सुन्तेहैं कोई सुकुमारी॥
कहीं छल से कहीं बल से कहीं दलसे भारी।
निश्चय लेजाते हैं उसको वे बड़े रणधारी॥

टूट॥

पौत्र उनकेहैं अनिरुधलाल। फाँसफँसनेकानकरकुछख्याल॥

उड़ान॥

ह्वैहै सब तुव मनमाना। सब दानवकटक जुझाना ७॥
उन जीते अगित नृपाला। ब्याही रुक्मिणि सी बाला॥
जग बिदित बली नँदलाला। खल दल नाशन गोपाला॥

शैर॥

जीता शिशुपालको जो छोहनी छयालिस लाया।
मदत पै जिसकी जरासिंधु कटकले धाया॥
कुटिल कुपंथी न छोड़ा जोइ कुंडिन आया।
रुकुम को जीत जिन्होंने जगत में यशु पाया॥

टूट॥

तेरा प्रद्युम्न ललन पतिहै। तू फिर किन कारन डरपतहै॥
उड़ान करिहैं सहाय भगवाना। सब दानव कटक जुझाना ८॥

चौ० यह पितु तोर न नीक विचारा। जो अनिरुधको फांसहि डारा॥
बहु अभिमान न भल काहूको। मान बिनाशत नरनाहूको॥
अती अंतपै करत बिनाशा। रहेउ न रावण से बलराशा॥
कंस कहा विधिकर नहिं छोरी। जियो कित कदिन करि अघघोरी॥
बालि बैर कर भ्रात दुखाया। सो हरि हाथ मर्यो श्रुतिगाया॥
को उनसों करि बैरि बचानो। अब यह बाण बहु अभिमानो॥
आन ग्रसो कछु पातक यहिको। स्वैयहिफलमिलिहैअबत्यहिको॥
शंभु वचन नहिं जायँ वृथाहीं। जिन वरलै यह तिनहुं सताहीं॥
हर रिपु हरि बैरी ज्यहि लोका। सो न जक्क तिष्ठै अविलोका॥
सहस्र भुजनि को यहि मद छायो। करत सदा स्वै निजु मनभायो॥
यह नहिं जानत कृष्ण बलाको। यदुवंशिन के प्रबल यथाको॥
नाकन चना बिनाय मनैहैं। जीत तोहिं द्वारा लैजैहैं॥

दो० सबकुछ धीरदई सखी ऊषा हिय नहिं आनि।
बिरह मदनकी वेधना को सहि सकहि सुजानि॥

अथ श्री ऊषोवाच॥

सो० विरच्यो राजकुमारि हे सजनी प्रिय प्राननी।
चहि कोउ डारै मारि मो मन जो फुर करहु सो॥

स० फांस भुजंगम ज्वाल भरी विषसी पिय को तनताय रहीहै।
कंत कलेश नवीन परो सुकुमार कुमारि झुराय रहीहै॥
हाय छुड़ाय न पाउँ पियै दुख हाय हियाहि समाय रहीहै।
पीउकी पीर लकीर ललन् हियरा मम बीर दहाय रहीहै॥

चौ० पिय शरनै जैहौं नहिंरैहौं। जियन मरन को शंक न सैहौं॥
भोजन भजन सकल बिसरैहौं। पिय कटिदुख दुखअपन मनैहौं॥
जहँ पिय थिर तहँ महूं थिरैहौं। अपनहुं तन अहिफांस फँसैहौं॥

सजन दहत तन महं दहैहौं। जिमु दुख दारुण हो तिमु सैहौं॥
नहिं कुलकानि ध्यान कछु लैहौं। लोक लाज पै गाज गिरैहौं॥
जननि जनक डर नाहिं डरैहौं। कुल मर्याद बिबाद बहैहौं॥
तीर परोसिन कहि समुझैहौं। युग करजोर चरण शिरलैहौं॥
नैनन सलिल सिंधु बगरैहौं। बाबुल को तहँ बोल पठैहौं॥
बिनय बिनीत रीत सरसैहौं। अपन बिथा समस्त दरसैहौं॥
यहि बिधि पिय प्यारेहि छुड़ैहौं। कै कारिख पितु बदन लगैहौं॥
बाद बिबाद अमित उपजैहौं। यशअपयशको भय जनि गैहौं॥
हानि लाभ सबकहि जतरैहौं। कछु न सरब बिष भख मरिजैहौं॥
कै गिरि सिंधुहि मध्य समैहौं। हन कटार तन अग्नि दहैहौं॥

दो० होनी होय सु होयगी सो को मेटनहार।
करमरेख नहिं मिट सकै जो विधिलिखी लिलार॥

अथ ऊषायाअनिरुद्धसमीपेगमनम्॥

सो० अस कहि ऊषानेति चित्रलेख सखि तजि तुरत।
कंत मिलनके हेति धाय चली अकुलाय तहँ॥

शुकोवाच–बीरछंद॥

धरि लाजगाज निशंक प्रिय। चलि जाइ बैठी निकट पिय॥
पति पेखि गदगद बिकल हिय। जल नैन बरस बही नदिय॥
भरि श्वास ऊरध गिरिय महि। तन नील पील परो अतहि॥
अँग अँग प्रवाह प्रस्वेद बहि। तनमन सुधहि सब गइ सकहि॥
जुरिआय नगरनिवासि गन। लखि प्रियहि हाल बिहालसन॥
कर मलहिं पोंछ पसीन तन। दृग वारिधार निवार छन॥
कोउ चँवर लै ढोरैं बिजन। सहराइ कर मस्तक चरन॥
नहिं चेतु निजु ललनी ललन। यहि भांति व्याकुल सर्व्वजन॥

चौ०सुनपुरजनवचघोरअलापा। बाणु अटा चढ़ लखु सन्तापा॥
उहिछिन सुत इस्कंध बुलावा। यहिविधि आयुष ताहि सुनावा॥

बाणेवाच॥

तनय जाइ तुम भग्नि आपनी। सभा विहाय लाउ ढिग जननी॥
कुटिल कुचालिभई अस क्वांरी। लोकलाज कुलकानिहु टारी॥
मम न शंक कछु वह उरधारा। परपुरुष सन नाता पारा॥
है अपराध सकल तनयाको। भटनदोष अघ तनक न ताको॥
ढीठ भौन तज सभा मँझारी। परिजन लागि बैठी मतवारी॥
सुता समुझ कछु सकहुं न मानी॥ पुनि बध करेउ कलंक निशानी॥
रिस आवत रहिजात कुमारा। तैं अब गमनु दपटु यहि वारा॥
अब न भौन बाहर है पावै। रुदन करै चहि प्राण गमावै॥

अथ ऊषातट इस्कन्धागमनम्॥

पितु आज्ञा इस्कन्ध पाइकै। उहिछिन भगिनी निकट आइकै॥
ज्वै देख्यो अनिरुध के तीरा। परीकराहति सुधि न शरीरा॥

इस्कन्धोवाच॥

दो० महाक्रोध कर अरुण दृग भृकुटी बंकु मरोरि।
भाल माल बल डारिकै बोल्यो नाक सकोरि॥
सो० अरीअघिन मतिमंद यह कह चरित रच्यो नयो।
भलसीखे छलछंद शंक न मम पितुकी हिये॥
स० बोल बताउ बुलाइसको यहँतोहिं निलाजिन राजकिमारी।
आनि न कानिकलङ्क कुध्यानगलानि न तोहिं भईढिठभारी॥
जा उठ बास अगार अरी अब यामहँ क्षेम बिगार अगारी।
होइ परीमम भग्निललन् नतु डारतु मार कुठार प्रहारी॥
चौ० अती उठाइ धरी शिर तैंने। उठिस न इतक कह्यो तुहिंमैंने॥

जनकजननिकुलनामलजावनि।जन्मतकिनमरिगइयअभागनि॥
तोसि सुता कोउ दे न बिधाता। असि संततिसों को सुखपाता॥
पितु आयुषजनिमुहिं पछितावा। नतु अबधे मानतु कोउभावा॥
हुमक हुमक लै पाणि कृपाना। यहिविधि कुवचसहोदरभाना॥

अथ ऊषा उवाच॥

तब दृग भरि कछु रोषि कुमारी। गदगदह्वै अस वचन उचारी॥
तैं बड़ भाइ सुहाइ सु कीजै। उचितानुचित जुचहिकहिलीजै॥
मुहिं वर दीन्हिसि शंभु भवानी। स्वैवर मोहिं मिलो यह आनी॥
अब यहि छोरि आनको ध्याऊं। तौ अपना को दोष सुजाऊं॥
पति त्याजैं स्वैवाम अकुलनी। परंपरा यहि रीति असुलनी॥
तव कुलपूजक शंभु सदाहीं। मम पितु गुरु कछु मृषाहिनाहीं॥
शिव वच टारनहार न कोई। तैं जसचहि मुहिं समझिय सोई॥

दो० हौं ज्यहि सम्बन्ध्यो समझ त्यहि ध्यायों न अनीति।
बहुरि बिलग कह मान जग यशुअपयशु युगरीति॥

सो० पति तज भजहि जो आनि सो प्रपंचि पापिन तिया।
हौंश्रुति नीतहि ध्यानि सुनि इस्कंध औरहु रिसो॥

नट छंद॥

झपट झोटा दै खपोटा बाणु ढोटा मूढ़।
पकरिबहिनै मनहुँ अहिनै गरल दहिनै गूढ़ १॥
खींचधायो मँदिर लायो बलदिखायो कूढ़।
खोल कुठरी डारिदुलरी मारि सँकरी पूढ़ २॥
लगहितारा पुनिपधारा रोष भारा रूढ़।
अनिरुधैलै अंक धरिकै अन्य थलपै छूढ़ ३॥
बहुरि जनकै तट गमनकै कह्यो मनकै लूढ़।

ललनचैना सुनसचैना प्रमुदऐना धु० ४॥
चौ०युगलबियोगभयोज्यहिबारा। बिरह विपुलदहबढ़ो अपारा॥
इत प्रिया खानपान तज दीन्हा। उत पिय शोग रोग दुखचीन्हा॥
इत प्रियनींद निशा सुखनासी। उत प्रीतमउर परम उदासी॥
रुदन नेम प्रिय नैनन ठाना। करतसदा अँसुअन अस्नाना॥
अंजन मंजनि चन्दन बन्दन। इनरंगन रँगिसाज बसनतन॥
योगिनिबनि महि धूरि लपेटी। उड़ी हवाइ बदनद्युति हेटी॥
हा पिय ममजिय जीवन प्यारे। यहि रट सदा रहे उरधारे॥
तुमहित तन मन सकलगमाऊं। जो न कुशल सन तुमकापाऊं॥
हा बैरी पितु भ्रात कठोरा। कोउ जनिआन हनै रिपुमोरा॥
हौं सनीति श्रुति रीति निबाही। जग विरोध नहिंकीन्ह ठगाही॥
त्यहिपै मुहिं असदोष लगायो। दै कलंक ममपीउ छुड़ायो॥
हाय दैव यह अनुचितको फल। बेगि दीजिये भ्रातपितुहिभल॥
दो० पी बिछोह अंदोह दुख छोह छिद्र अगाह।
बिनु पिय दरशनऔषधी नशै न बिपति अथाह॥

अथ ऊषाराधन भगवद्विनय प्रारम्भः॥

सो० हे विधि होउ दयाल अबबिलम्ब जनि चितधरौ।
नहिं जियजाइ बिहाल तुमबिनु कोजन दुखहरै॥

अथ रागिनीप्रभाती इकतालामें पद॥

तुम बिनु गोबिंद गुपाल कोजन दुखटारे॥ अन्तरा॥ भक्त वसल अतिउदार माया तुम्हरी अपार दशरथ दुखटार अवध तुमहीं अवतारे॥ १॥ बिश्वामुनि मखरचाइ तासु तुमहिं कियो सहाइ खलमल छल विपुल ढाइ जनकपुर सिधारे॥ २॥ भंज्यो जहँ शिव पिनाक रहेउ अमित भूपताक ब्याही सिय

सुखद साख सुयश जग सचारे ॥ ३ ॥ जान जननि केरि आस तज्यो राज्य अवध बास कीन्हो कानन निवास निश्चर संहारे ॥ ४ ॥ सन्तशाप हरनहारि तुमहिं हरई सियसी नारि पवन पुत्र मिलु सुखार बालिबध बिचारे ॥ ५ ॥ जामवन्तु बनैमीत उतर उदधि सरल रीत रावणखल कुल सहीत सकलहि उद्धारे ॥ ६ ॥ विभिषण लंकाहि दियो जनकसुतहि जीतलियो आनअवध राजकियो भरत दुख निवारे ॥ ७ ॥ अंगद सुग्रीव गेही गीध औ निषाद नेही नंदललन जन सनेही सकल योग प्यारे ॥ ८ ॥

चौ० प्रद्युम्नात्मजहू वहि रीतन । सोच बिचार करैं अनरीतन ॥
कहहिंकबहुँ अहिफांस बिदारौं । भुज सहस्रसन पुनि रणधारौं ॥
कान मोर विध कोउ सहाई । बहु दिनगे खलफांस फँसाई ॥
दृगउठाइ चहुँ लखि नभ धरती । उठी फरक भुज दहिनावरती ॥
त्यहिदिन श्रीनारदमुनि ज्ञानी । हरिगुणगावत पहुँचे आनी ॥

अथ श्रीदेवऋषि आगमनम् ॥

ऋषिआगमलखि प्रभुसुखपायउ । सादर मुनिसमीप बैठायउ ॥
कुशल पूंछि बहु बरणि बड़ाई । मुनिकी प्रीति दयाकहि गाई ॥
धनि ऋषिराज आजकी घरिया । तवदरशननिजुनैननिहरिया ॥
दुखित देख हरिपौत्र मुनीशा । बाणाकृतिलखिअतिमनखीशा ॥

श्रीनारदोवाच ॥

दै ढाढस अनिरुधै सुनावा । बीर न कछु करिये पछितावा ॥
अबहिं जाइ मैं श्रीहरि पाहीं । खबरि करत बलरामहि काहीं ॥
सुन सँदेश प्रभु बार न लैहैं । लै सैना हलधर चढ़िऐहैं ॥

दो० जीतबाण खलदल बिनाशि तुमहिं छोड़ाइ बहोर ।
लैजैहैं गृह आपने नागर नन्दकिशोर ॥

अथ बाणासुरसमीपे नारदागमनं पुनरुवाच ॥
सो० यहिविधिकहि ऋषिराज गयेबाणआगार पुनि।
बरणि सुनायो सार तुम न कीन्ह यहकाज भल ॥
छन्द दादरा रागिनी झँझौटी ॥
नबानुरे नदानुरे बिहानुरे सयानुरे ॥ अन्तरा ॥
जानै न कारे ध्यानै न कारे बिरच बैठो कौन मतारे।
ज्यहि युवराजको फाँसग्रसारे ठानुनहीं भलठानुरे १ ॥
ये अनिरुद्ध गुपाल को पौत्र प्रद्युम्नको लाड़िल क्वांरअरे।
नहिंजानेतू यादवबंश बली उनसोंकछुकासु बिसानुरे २ ॥
जक्तविदीत प्रताप कला नरपाल मुनीश्वर दानवरे।
मनतैंनकियोकछुशंक अभय अबअंतपैहानि प्रमानुरे ३ ॥
तवक्षेम के हेत मिलो तुमसों कृतज्ञानकियो कहमानवरे।
तैंजानै सुतैसी करै अबतो कछुना ललनै बुधिवानुरे ४ ॥
अथ बाणासुर उन्मत्तोवाच ॥
चौ०सुनिमुनिबैन न कछुअदरायो।बहुरि बिहँसिकछुमनमदलायो॥
हौं यदुकुल भलभांति न जानों। मोसन तिहूँपुर कौन डुरानों ॥
अस उचार ऋषि दीन बिदाई। गे मुनि मुदित ब्रह्मपुर धाई ॥
शुकदेवोवाच ॥
यहि प्रकार श्रुतिमास व्यतीते। खलनछोड़ अनिरुध फँसरीते ॥
तब मुनीश द्वारिका पधारेउ। गगन मार्ग तें कहा निहारेउ ॥
यदुकुलसकलबिकलअकुलाहीं। मन मलीन तनछीन जनाहीं ॥
श्रीहरि हलधर त्यागेउ आपा। नरनारी कररहे बिलापा ॥
करहिं चिंतवन अचरज ठयऊ। को ह्यांते शिशु हर लैगयऊ ॥
पर्‍यो रुदन रणवास मँझारी। सुधिबुधि विस्मृततनमन सारी ॥

हाहाकार शब्द अधिकाई। कानधरी नहिं परै सुनाई ॥
विपुल बिकलतादेख सबनको। गे मुनि तुरतकृष्णदरशन को ॥

अथ द्वारापुरीनारदागमनम् ॥

चौ० ऋषिआगमलखिसकलजुड़ाने। जाइ मुनीश चरण लपटाने ॥

अथ श्री ब्रजजनाश्च श्रीकृष्णकुमार ॥

दो० बिनय बहोरिनभानिबहु पूछ्यो सब नरनार।
अहो देवऋषि दयानिधि तुमज्ञाता संसार ॥

सो० है आश्चर्य्य महान जानिपरत नहिं कासु कृति।
शिशु अनिरुद्ध नदान ह्यांतेकोउ हरलैगयो ॥

नाराच छन्द ॥

नहीं बिना तुम्हार कोउ दुःख को हरै मुनी।
न भेद कोउ पायगो शिशू कुं कौन है गुनी ॥
भले दिये दरश्श आन हे कृपानिधान जू।
नशे बियोग रोग शोग जे यदूमहान जू ॥
पिकून को मनो सुआंति बूंद दै जिवालियो।
तुम्हैं समान कौन आन सुःख हीयरा दियो ॥
बरो दया यही बड़ी सँदेश बाल को मिलै।
वृकोदरौ यशोदहू ललन्न को हिया खिलै ॥

अथ श्रीनारदोवाच ॥

मती उदास हो हिरास राखिये हुलासही।
तुम्हार अन्निरुद्ध है खुशाल बे तिरासही ॥
कियो सँयोग बाणु की सुता सुंजायकै उन्हैं।
रखो भुजंग फांसमाहिं फांसिकै बली तिन्हैं ॥
सुथान शोणितौ पुरे व्यतीत वेद मास भे।

गयो तहां बिलोक बाल फांसबास त्रास भे॥
बहोरि बाण को प्रबोध दीन्हहौं नहीं मन्यों।
प्रताप आप को करोरभांतिहू महू भन्यों॥
बली महाभिमान सों भनों इतो जरूरही।
किये बिना न युद्ध छोरिहौं शिशूह क्रूरही॥
लखी जुबात हौं कही सुनाय ठीकठीकसो।
करौ उपाय भावतो लगे अनीक नीक सो॥

अथ श्रीनारदमुन्याधिगमनम्॥

चौ०यहिविधिकहिगहिआज्ञाहरिकी। मुनिवर बाटलई निजघरकी॥
सुन मुनीश के बचन मुरारी। उग्रसेन प्रति खबर पधारी॥

अथ श्रीउग्रसेनसमीपेयदुजनयात्रावर्णन॥

यदुगण जाइ भुवाल ढिग डोले। नारद के बच कहिसब बोले॥
महाराज शोणितपुर माहीं। बाणासुर शिशु फाँसफँसाहीं॥
रमी सुता अनिरुध ने वाकी। लै उन बांध्यो बाल अचाकी॥
कह आज्ञा तव ताहि सुनावौं। अखिलदुखितव्रजाधिपतिबिहावौं॥

अथ श्रीउग्रसेनोवाच॥

चौ०भूपकह्यो ममकटक सजावौ। आलग्यागन बार लगावौ॥
लै सैना खल जीतहु जाई। ल्यावहु बालक बेगि छुड़ाई।

अथ श्रीकृष्ण बलराम सेनायुत शोणितपुर गमनम् यात्राशोभा वर्णन॥

सुनि नृपबैन वृकोदर साजे। दनुजबधन हितकीन्हसमाजे॥
इत श्रीहरि प्रद्युम्न कुमारा। अस्त्रशस्त्र लै कोप अपारा॥
गरुड़यान बलवान बिराजे। छिनकमाहिं बाणापुर राजे॥
त्यहि छिन श्रीबलराम बलीशा। लै सैना सम्हेरउ जगदीशा॥

सो शोभा कछु बरणि न जाई। बीर धीर रणधीर निकाई॥

दो० अग्र हस्तिया दल प्रबल पांति पांति तिनपाहिं।
ध्वजा पताका फहरहीं धौंसा बजैं अथाहिं॥

सो० बहुकुंजरन समूह झूलन अंबारिन दिपैं।
तिनपै नृप अम्बूह तन अभरन आयुध सजे॥

छन्द मनहरन दण्डक कवित्त॥

रथन के तांते सो सुहाते जगमगाते ज्योति नगनकी पांते बहु भांतेहीं जड़ाउ के। पट मखतूल मढ़े बूटा औ बेलकढ़े सलमा सितारे कारचोबिया लदाउ के॥ परदे ज़रीके तास बादला खरी के जाल चौपड़ छड़ी के काम नीके से बनाउ के। वृषभ विशाल बहु जातियारसालसुभ्र चाल ढाल बाल सो ललनसुहैं कृष्ण राउ के॥

चौ०रथ मझोलिपाछे बहु वृन्दा। कल्ल कुरंग अलमस्त मलिन्दा॥
जाती अमित देश देशन के। अलबल खरे खेत खेतन के॥
चंचल चपल चलांक बहूना। पवन गमन गतिसों बहुबूना॥
अँग अँग अभरन साज सुहाते। कलँगिसलँगछबिअजबाहिभाते॥
रेशम कलाबतू गुन गूंधे। ग्रीव कचनबिच मणिगणरूंधे॥
मंजु मुहार हार हीरन के। पान पुंज गलसों सुबरन के॥
ललित लगाम बनावट चोखी। मथ मुक्तालरि दिपैंअनोखी॥
चोटिहि चारु सुहाइ नवेली। लरकैं लरी परी अलबेली॥
जीन पीन रंगीन नवीना। तासु बादला मंजु मरीना॥
बाज बाज के साज निराले। तिनपै यदुबंशी भट चाले॥
चंचल चाल जमाते जाते। दुलकी कदम कदम ठहराते॥
तिरत फिरत नवगती नचाते। कुदय फँदय सरपटगति लाते॥

दो० बीर बांकुरे बहुबली कीन्हे विविध शृँगार।

मदनमत्त उनमत्त मन रूप स्वरूप अगार॥
सो० नख शिख शोभा मान बसन अभूषन भावने।
रंग रँगीले ज्ञान बहुनामकि घोड़न चढ़े॥

क०। पीति वीति घोटक तुरंगम हय अश्व अर्व सप्तिघोट सैंधव तुरंग अतुरावने। तुरकि गन्धर्व्व वाह वाजहू बिनीतवर पारसीक कामबोज आजानेय पावने॥ बाह्लीक जवन आदिव नायुज पृष्ठ्य ययु रथअधिकारी रथ्यकर्कहू सुहावने। कुलनिकिशोर सो कुरंग किलकन कल कोतल कमाउ की ललन मनभावने॥

क०। कच्छिया कपूरी कुल्लानूरी पै सब्जूरीमल आरबी अँगूरि अब्लखी अजीब रंगहैं। पिल्खा औ सफेदा सब्जा सुर्खा इले मासिया से कासनीकसीसी किस्मिसी भरे उमंग हैं॥ लीलि या सँजाफी लाखी सुर्मई सुहैं ललन संग सेवती सहावी सूहा बुल्बुली सुरंग हैं। हिंसतहुमकत हिमकत हिरकत थिरकत मुरकत कुदकत कुहंगहैं॥

चौ० आयुध अमित सुधार धरीले। कांधन करन कठिनु भटढीले॥
कोउकर कठिन कुठार सुहावत। कोउकरिगदकाफेंकि फिरावत॥
कोउ खांड़ालै खड़े कटारा। छुरा छुरी जमधरा कुल्हारा॥
कोउ बरछी बरछे गहि भालन। बल्लम बाना पटा सुहावन॥
धनुष बाण बहुगहे कटारी। गदा चक्र फरसा तरवारी॥
गुप्ती बांक बिछूअ गड़ाँसे। सैफ भुशुंडी कर अनवासे॥
शस्त्र अनेक भांतिलै योधा। टीड़ीदल पैदल झलक्रोधा॥
समर कराभट हौंसी हौंसा। ढप ढोलनहिं बजावैं धौंसा॥
कोउ नरसिंहा फूंक सुनाते। बीर रणी बांसुरी बजाते॥
चल्यो बृकोदर दल यहिभांती। उड़ी रेणु रवि ज्योति दुरांती॥

तिमिरत द्योस भई मनु राती। चकवा चकइ बियोगिजनाती॥
बिकसे कंज कुमुद कलि फूले। खग निशिजानु बसे बनकूले॥
दो० परहिं बाणुके गढ़मठी देश जौन मगमाहिं।
तोड़ तड़ाक उजाड़कर मारहिं दनुजन काहिं॥

अथ श्रीहरिबलदलशोणितपुरप्राप्तः॥

सो० यहि विधिकरि विध्वंशि पहुँचे बल शोणितपुरहि।
मिले सकल यदुबंशि श्रीहरि श्री प्रद्युम्न सन॥

अथ बाणसमीपदनुजदलस्यागमन पुनरोवाच॥

स० लखि आगम श्री ललनै दल को हहकार सुशोणित माहिं परो। घबरान भयानक हीय धसी दल दानव बाणुहि जा उचरो॥ महराज तुवैपुर कृष्णबली बल सैन कु आन निशान गरो। गढ़कोटनु ढाय गिराय सुदेशहि घेरलियो तुमहूं सम्हरो॥

चौ० आयसु होयहमैं कहकहिये। करहिंसोइ जाविधि पतिरहिये॥
सुनिअस खल बचबाणु सरोषा। बुलये महाबली खलकोषा॥

बाणासुर उवाच॥

कह्यो सकल तुम आयुध धारौ। नगर चौकसी काज सिधारौ॥
बीरकृष्ण बलराम बलीते। करहु मोरचा जाय छलीते॥
तुम पाछे हौं आवत अबहीं। शम्भु प्रताप विनाशहुंसबहीं॥
गहि अधीश आज्ञा खल धाये। लैलै अस्त्र शस्त्र चहुँ छाये॥
सुमुरिशम्भु को धरि उर ध्याना। आन उपस्थित भा तहँ बाना॥

अथ बाणबिनय॥

शुकदेवोवाच॥

चौ० ध्यावतशिवसमाधिसोंजागे। जनदुखजान योग जपत्यागे॥

उमा अर्ध अंगी छवि धारी। जटा जूट शिर मुकुट विहारी॥
चिता भस्म तन लेप सुहाई। आक धतूर भांग बहु पाईं॥
यज्ञोपवित लसित सित व्याला। कुंजर चर्मधार मुँडमाला॥
पाणि त्रिशूल पिनाक अगाधा। डमरु शृंगिलै खप्पर साधा॥

दो॰ चन्द्रमौलि त्रैलोचने सुरसरि शीश तरंग।
अंग अंग शोभित अमित भूषणविपुल भुजंग॥

सो॰ शृंग मुद्र श्रुतिघाल महा भयंकर बेषधर।
मनु मूरत महकाल सकल रुद्रगण सँगलिये॥

भुजंगी छंद॥

नांदिया सवार लै पिशाचि डाकिनी अनीह।
शंकिनी अशंक शंख संग भूत प्रेतनीह॥
बीरलै गँभीर धीर डामरू बजावतेइ।
आन बान पास बेगि ठाढ़भे जनावतेइ॥
देख बिकरालरूप शंभु बाण भा प्रमोद।
बीनती प्रशंस गाइ भानु शंकरै समोद॥
नाथ तोर बीन को कलेश मोर टार देहि।
दास को सहाइ शम्भु तूहि एक आर देहि॥
हे अनन्द कन्द मोहिं शंकना रही अबेक।
तोरही प्रताप ते हनौं यदू अभी प्रतेक॥
फेर बाण यों कह्यो कि धर्म्म युद्ध हो अरंभु।
शूरबीर दोउ ओर उद्दितै भये सुशम्भु॥
बाजने जुझाउ बाजने द्वहून ओर लाग।
शूर शस्त्र धार सम्रहेतिमूं मुरैन युद्ध वृत्तिपाग॥
कायरो नपुंसकौ सुरण्य खेत त्याग त्याग।

प्राण आपने बचाय चालु भौन भाग भाग॥
भूत प्रेत लाय धाय धाय के धसे महेश।
घोर युद्ध लेन लाग चन्द्रभाल ते ब्रजेश॥
बाण बीरभद्र ते स्कंधहू प्रद्युम्न सेति।
या प्रकार एक एक ते भिरै सुनेति नेति॥
शंभु पाणि लै पिनाक कृष्ण शारँगौ धनूष।
ब्रह्म बाण छाण शंभु ब्रह्म शस्त्र कृष्ण रूप॥
रुद्र पौन बाण छोड़ हाहकार डार दीन्ह।
ताहि शेष बाणसे हरी भरी निवृत्य कीन्ह॥
फेर महादेव रोष बह्नि उपजाइ घोरि।
तासु दाह गोकुलेश मेह ते बुझाइ झोरि॥
पीछ विष्णु तीव्र ज्वाल कृष्ण ऐस दै प्रसार।
शंभु बृन्द देह मूँछ दाढ़िहू दई प्रजार॥
बीर धीर छोरदै असूर आकुले महान।
त्राहकार देख शंभु अम्बु बृष्टि की निदान॥
वारि डारि भूत प्रेत राक्षसानु शान्ति दीन्ह।
आप क्रोध ठान तीर नारि आपणीय लीन्ह॥
छोर ना सके अलस्य बाण कान्ह दीन्ह फेंक।
कै अचेत बाणु यूथ काट फेंक दीन्ह छेंक॥
स्कंध यों निहार मोर पै सवार हो अलोपि।
अंतरिक्ष होइ श्याम सैन पै कराल कोपि॥
बाण बृन्द खर्ब गेरने लग्यो चहूं दिशानु।
सांवरे लल्ल पेखि दुष्ट कृत्य काहि भानु॥
मोर पै चढ़ो अधर्म्मि आसमान ते लरैजु।

तात आयसै जु देहु मार डार दूँ खरैजु ॥

शुकोवाच ॥

चौ०सुनसुतबच प्रभुआज्ञादीन्ही। स्वै प्रद्युम्न घात त्रित चीन्ही ॥
लै शर मयुर मार महि डारयो। बाणसुवनगिरअवनिचिघारयो॥
तनयदशा लखि पुनि खलकोपा। पंच कुठार लाय रण रोपा ॥
प्रति धनु बिच युग शर संधाने। घन झरसी लाग्यो बरसाने ॥
स्वै श्रीकृष्णचन्द्र भगवाना। तासु प्रहार निवार निदाना ॥
घोर युद्ध यहि विधि प्रभु आन्यो। बाणदनुजदल बिपुलबिलान्यो॥
कछु मरि गिरे धरनि खलबृन्दा। कछु कराहिं घायलगण जिन्दा ॥
हाहाकार परो महि मानौं। गावत फाग राग सब जानौं ॥
समरिक वाद्य बजैं बहु भांते। मनहुं धमार ध्वनी सरसाते ॥
रणमहि बगरो रक्त अपारा। जनु गुलाल फागुनी पसारा ॥
प्रेत पिशाच दनुज दल झूमहिं। मनहु फाग सों खेलत घूमहिं ॥
रुधिर प्रबह मनु रंग नदीसी। तीर छुटैं पिचकारि झरीसी ॥

दो० शीश अमित कट २ गिरे लोहु नदीके माहिं।
मनु कुम कुम अवली भली बगररही चहुं पाहिं ॥

सो० उभय ओर रण घोर मनहुँ फाग सों मचरह्यो।
खेलैं खेल करोर बांक पटा तरवार भट ॥

हरिगीत छंद ॥

यहि भाँति समर मँझार श्रीहरि कुँवर बलदाऊ हरी।
खलसैन मारि बिदार धरनि पसार दइ बिच यक्कघरी॥
रणधीर बाणाबीर समर न परिहरै हरि सों लरै।
बहु छल करै माया सरै मुख मोर पीछि न पग धरै ॥
बहुकाल यदि अस बीत तब यदुबंश भूषण पेखके।

भरि रोष यक शर मारि सारथि डार दीन्हो छेंककै॥
रथवान गिरतहि अश्व भड़के बेतहासा भगचले।
इमिदशा निरखिकलाँगरथते भग्योरणतजनिजुदले॥
प्रभुकीन्ह पीछातासु कठरा जननि सुत भाग्यो जन्यो।
तताछिण भयानक भेष भरिहरि शरणलै हांहां भन्यो॥
तिय जान थिरभे कान्ह द्दगतर पीठ दइ श्रुतिपतिहरे।
तबलौं क्षुहनि दलदनुज लै पुनि आनिपहुँचोमदभरे॥
दइ जननिटार गुहार हरिभुजसहस आयुधसाजिकै।
आभिरो बहुरि महान बली अनंत सुभट समाजिकै॥
बहु भांति अगर बगर डगर नभ आसूरी मायाझली।
बल सिंधु श्रीयदुनाथ सनमुख एकवाकी ना चली॥
अवलोकि श्री हरि बीरता नभते सुमन सुंदर झरैं।
बहु दुंदुभी नौबत नगारे बजैं सुर जय जय करैं॥
लरि असुर सकल बधाय भागो फेर शिव ढिगआतुरो।
हे नाथ होउ सहाय ममदुख अब न कछु तुम सों दुरो॥
जन दुखित निरख महेश कोपे महाबिषमःज्वरबुलय।
रवितेज सम त्रैमुंड नौपग छकर दाहक तिहुंकुलय॥
भरि भारि भ्यानक भेष भूधर शिवाज्ञालै चलि भयो
यदुबंश यूथप आनि दाहे महाखल बल दल छयो॥
अकुलात कंपित गात भागत जात हरिचरनन परे।
नँद ललनहोउ सहायनहिं हमसकल शिव ज्वरसोंमरे॥
चौ०दुखित देखयदुबंशि बहूता। सुधिबुधि बिहितरहितबलबूता॥
तब श्री प्रभु शीतज्वर छारा। शिव बिषमःज्वरजाइ पछारा॥
बिकलितह्वै शिव पाहिंसिधावा। आरत बचन बखान सुनावा॥

हे शिव अब ममकरहु सहाई। शीतज्वर तन दीन्ह दहाई॥
हर हरिज्वर लखि प्रबल महानू। प्रभुहि शरणकहँ जाउ कृशानू॥
बिनु उन कृपा न तव दुखजैहै। तिहुंपुरअसकोउनजुजाहिनशैहै॥
शंभु मतो लै त्रिषम सिखायउ। अतिआकुल यदुपतिपै आयउ॥
महाभयातुर कँपहि गँभीरा। नौ पग पट कर त्रिशिर शरीरा॥
गद गद बचन फुरत नहिं बानी। तन प्रसेव झर लोचन पानी॥
गिर महि साष्टाङ्ग प्रभु बन्दा। युग करजोर डारि गरफन्दा॥
पुनि २ प्रणमु चरण अरविन्दा। रगरिअवनिनासिकाअनिन्दा॥
विनय बहोरन बहुविधि गाई। आरत बचननु झरी लगाई॥

दो० श्रीपति आनँद कंदजू दीनबन्धु भगवान।
जन रक्षक भक्षक विपति भवसागर जलयान॥

सो० तुम प्रताप बिनु थाह अज सुरेश नहिं भनसकैं।
बलनिधान श्रीनाह तुममाया तुमहीं जनौ॥

अथ गोपालाष्टक॥

नाराच छन्द॥

पिता पवित्र आत्मकम्। प्रभो विभो गुणात्मकम्॥
हरे परे अजा जरम्। नमामि ब्रह्म ईश्वरम् १॥
समस्त सृष्टि थापकम्। अनन्त भेष व्यापकम्॥
अभेदि भेद नाशकम्। दया मया प्रवासकम् २॥
महा प्रभू पुरातनम्। सुतंत्रही सनातनम्॥
अनूप रूप धारिकम्। बिराट रूप कारिकम् ३॥
अगूढ़ भाव भासितम्। विमुक्ति मूर्त्ति भावितम्॥
निहारु नाथ किंचितम्। द्रवो दया अचिंतकम् ४॥
अती दुखीत देह मम्। न तान मान आगतम्॥

तुम्हार शीतयज्वरम्। दहाइदाह दै तनम् ५॥
बिथा अथाह बै मरम्। कपाट फाटते त्रियम्॥
अजान ढीढता भरम्। महापराध कीन्ह हम् ६॥
दह्यौं तुम्हार यादवम्। मिलो सुतासु को फलम्॥
गुमान मान पालतम्। वही दुखी रहें परम् ७॥
समानभाव है स्वयम्। त्रिलोक जीय जीवनम्॥
हरो निजौ ज्वरानलम्। ललन्शरन्जनम्जनम् ८॥

चौ० विषम बिनयसुन श्रीब्रजनाथा। प्रमुदितदैराख्यो शिरहाथा॥
अभय कीन्ह श्री दीनदयाला। सावधान भा ज्वर ततकाला॥
पुनि प्रभुकहिममशिवचितलैये। अब न कबहुँ ममभक्त सतैये॥
अपन आन तुहिदेत जनाई। ममजन ढिगजनिजैयसिधाई॥
विषम भन्यो हे करुणाअयना। जो तव सुयश सुनैसुखदयना॥
तीनउज्वर इकतरा तिजारी। तिन्है न व्यापै ऐस बिमारी॥
असकहि ज्वर मन परमहुलासा। करिप्रणाम गा शिवके पासा॥
इतै सहसभुज कोपि कराला। लै आयुध आयो त्यहिकाला॥
मनमोहन सों टेर सुनायो। अबहिं न हौं तुष्टो रणलायो॥
बलाभिमान देख बाणा को। बाढ़ि विपुलरिसनँदलालाको॥
फेंक सुदरशन चक्र चलायो। श्रुतिभुजरविअरुसबनुनशायो॥
अँग अँग घायल घोर थकानो। रुधिर बमन धरनी पर आनो॥
रक्तनदी बहि चली अथाहीं। कटकट गिरीं भुजात्यहि माहीं॥
मनहुँ मीनगण बिलसहिं बासा। धरैं पनिहाले सर्प बिलासा॥

दो० हय करि खर ऊंटन भटन शीश परे यहि भांति।
कच्छ मगर घड़ियालजनु नदिया माहिं तिराति॥

सो० आंतैं यूथप जोंक मांस चर्बि दल दल महा।

भ्यानक भूखिल थोक मरीं परीं लोथैं सड़ैं॥

मनहरण दंडक छंद कवित्त॥

मीदरा घुमंडैं स्यार शूकरा हुहंडैं निजु अशनलखि प्रचंडैं मार डंडैं हँसैहैं। जुटे खानमांस श्वान स्मशान महँ सुकोई रक्त पान में उछाह बिलसे हैं॥ इर्द गिर्द गिद्ध गाढ़े प्रमुद हृदय बाढ़े जीभ चोंच काढ़े ठाढ़े लोथनहिं भषैहैं। काक चील्ह चाउ भरे पंछी पशु ताउभरे हसहै अनन्द नँदललन जै भनै हैं॥

चौ॰ यदिरणभूमिदशाअसिदेखी। बाणासुरमनमलिन बिशेखी॥
कर मींड़त पछितात निदाना। शिव समीप आयउ अकुलाना॥
विह्वल बहु तन आवहि झाना। दीन बचनकहि पग लपटाना॥
बाणदुखितलखिशिवअनुमाना। भलखतको अभिमानबुझाना॥
अबप्रभुकीशरणागत चलिये। बाणु बिथा तुरता दलमलिये॥
सहसबाहु शिव संग लियेजू। बांचत वेद ऋचा गमने जू॥
गे रणवास भूमि पग नागे। जहँ श्रीकृष्ण रह्यो रिस पागे॥
प्रभु प्रताप की बरणि बड़ाई। करि बन्दन बहु विनयसुनाई॥
लै बाणा हरिचरणन डारो। जोर युगलकर शम्भु उचारो॥
हे शरणागत वत्सल नाथा। अब यह तव आधीन अनाथा॥
करिय कृपा यहिपै श्री स्वामी। तुम घट बाहर अन्तरयामी॥
यहि की खोरि न कछु चित दीजै। जो कछुहो अपराध क्षमीजै॥

दो॰ जगकारन तारनतरन अघहारन भव केर।
दुखटारन मारन खलन धारन रुचि चितचेर॥

सो॰ अवतारन धरनेति कछ मछ बावन बरहकौं।
नरहरि परशुसमेति रामश्याम कलिबौद्ध तन॥

गर्ज्जलछन्द॥

न पाया भेद यदुराया तुम्हारी गूढ़ मायाका।
अलख अविगति अगोचर ब्रह्म अजनरतन अजायाका १॥
अमित अवतार रूप बिराटका तुमनेहि तो धारा।
कि जिसका स्वर्ग शिर नभ नाभि पृथ्वी पैर काया का २॥
पुरन्दरभुज उदधिओदर बलाहक केश नख पर्व्वत।
दिवाकर निशिपती दृग रोम तरु मन ब्रह्म न्याया का ३॥
अहंकारादि है जो रुद्र गरजन शब्द अनुमानो।
पलक लागब सोई निशि द्योस श्वासा है हवाया का ४॥
स्वइच्छा कारि गति अद्भुत सनातन नँदललन तेरी।
कहैं सब योग योगीजन मुनीश्वररूप दाया का ५॥ इति॥

श्रीशिवोवाच॥

चौ० यह संसार सिन्धु दुखकेरा। चिंता मोह सलिल चहुँ घेरा॥
सो तव नाम बिना नौका के। को लगिसकै पार प्रभु ताके॥
नरतन लै तुहिं भजै न जोई। पाप ताप निधि जानहु सोई॥
तजअभिनाम विषय विष धारा। कोटिजन्म न तासु निस्तारा॥
ज्यहि उरभक्ति शरण तुम्हरेही। उनकरतल जग सुख सगरेही॥
युगकर जोर ठाढ़ रहे मुक्ती। जेजनभजैं तोहिं हित युक्ती॥
कृपासिन्धु सुखकन्द मुरारी। महिमा तोर अपूर्व्व अपारी॥
तुम सब शक्तिमान सर्व्वोपर। जन वत्सल करुणाकर मोंपर॥
बाणु दोषक्षमि तनकु निहारिये। समुभदीन चरणन रतिबारिये॥
प्रभु तव जन प्रह्लाद अंश को। भूप बीर यह तासु बंश को॥
त्रिपुर विनाशन विनय बखानी। सुन मन मुदित भये चक्रपानी॥

श्रीकृष्णोवाच ॥

बहुरि बिहँसि असकह्यो व्रजेशू। हम तुम बीच न भेद महेशू ॥

दो० जौन भेद उररखहीं हम तुम महँ कर तर्क।
सो जन मोहिं न पावहीं परैं चुरासी नर्क॥

सो० जे छलछंद त्याग मन बच क्रम चितलायकै।
करैं तोर अनुराग अंतसमय मम पुर बसैं ॥

स० तुम्हरो नित नाम जपो यहने रण लावत नाम तुम्हार लियो। यहि कारण सों त्रिपुरारि महूं भुजचारि दई नहिं बध्य कियो ॥ तुम्हरो जन प्राण हमार प्रिया तुमने बरदान जु जाहि दियो। नित कान कियो अपनो ललनै अतिभा सुन शङ्कर मग्न हियो ॥

अथ शिवकैलाशपुरी गमनम् ॥

चौ० लैसमाज शिव बंद हरीको। गमन कीन्ह कैलाशपुरीको ॥
इत बाणासुर करयुग जोरे। श्रीहरि सनमुख ठाढ़ निहोरे ॥

बाणोवाच ॥

विविध विनति भनि प्रीतजचाई। अपन कुटिलता सकलसुनाई ॥
जैस कृपाकर मो तन हेरे। सो प्रभु मोहिं न कहत बनेरे ॥
कीन्ह सनाथ मोहिं यशुकेतू। तसचलु ममशुचिकरियनिकेतू॥
रति तन मोर कांरिका जोई। मैन जन्म श्रीअनिरुध सोई।
युगल बिवाह कीजिये देवा। पारलगै ये प्रभुजन सेवा ॥
निरख पुनीत प्रीत भगवाना। भे दयाल श्री कृपानिधाना ॥

अथ श्री हरि बल प्रद्युम्न बाणागार गमनम् ॥

लै प्रद्युम्न संग बलदाऊ। बाणअगार चले यदुराऊ ॥
बजहिं दुन्दुभी घोर नगारे। विविध बाजने सुघर सुखारे ॥

बाणासुर मन मुदित अपारी। लै पाटम्बर पांवड़े पसारी॥
मग मग पग पग डारत जाई। लये जात निजगृह दोउभाई॥
दो० भाव भगत दरशाय बहु प्रेम प्रीति सरसाइ।
ढोरत चमर मुरारि पै पहुँचो आलय जाइ॥
सो० धर सुबरण को थार लै निरमल जल बलितनय।
श्रीहरि चरण पखार अचमन दै शिरधर कह्यो॥
छन्दग़ज़्ज़ल॥ अथ चरणामृतमाहात्म्य॥
महा दुर्लभ पदोदक नाथका जग मुक्ति दाता है।
प्रतापी जौन तिहुंपुरमें सोई नर इस्को पाताहै १॥
हमारे भाग जागे आजका धनि धनि महूरत है।
हुये अनुकूलहरिहम पर सुखदये दिनदिखाताहै २॥
ये चरणामृत् वोहै विधिने भरा जिसको कमंडलमें।
रमाया शीशपर शंकर यही सुरसरि कहाताहै ३॥
अजर तेंतीस कोटी जो मुनी ध्याया भगीरथने।
त्रिसुर सेवा सुफलकरके लिआया वेदगाताहै ४॥
हरीपादोदकीगंगा यही कलि मल पतितपावनि।
त्रिलोकीमुक्तिदा दरशनते आवागौनजाताहै ५॥
किये जलपानते जिसके विनाशैं रोग अनहोने।
जमीबहुजन्मकेअघकी जमनिकाको नशाताहै६॥
ललनकुछकरसके वरणन् न शारद शेशमहिमा को।
परमपदका वो अधिकारी जोनितउठिगंगन्हाताहै ७॥
चौ० पूजविविधविधिआरतिकीन्ही। मनमनशापरिपूरणलीन्ही॥
उहि छिन बिबुधन बोलिपठावा। गृह मंडप बहुभांति छवावा॥
डार पटा सुवरण मणि भेदी। कीन्ह सुशोभित सुन्दर वेदी॥

द्वार नगार दीन्ह धरवाई। विविध वाद्य बाजैं सुखदाई॥
निरतैं नटी नटा गतिलाई। गावें विमल विशाल बधाई॥
बंदि भाट याचक जुरिआये। उभय ओर बंशावलि गाये॥
लै ऊषा अनिरुद्ध सहीता। सज सुन्दर शृंगार सुरीता॥
बना बनी बेदी बैठारे। बिबुध नवग्रह पुजे सुखारे॥
बाण सबाम मुदित तहँ आवा। युगल चरण पखारि सुखपावा॥
बहुरि सुता श्रीअनिरुध जीको। कियो भाल रोरी को टीको॥
लै बहु खचार निज पाणा। कन्यादान दियो नृप बाणा॥
दिये दान नेगिन बहु भारे। यदुबंशी सनमान अपारे॥
अस तनया यौतिक महँ दीन्हा। जाको पारावार न चीन्हा॥

दो० सुतादई बिनती कई आनँदमई अपार।
श्रीहरि बल प्रद्युम्न पग धर शिर कह्यो उचार॥

सो० कोउ न योग महराज हम से खल तुम अपनये।
पूरे मम सब काज मो सम को बड़भागि जग॥

अथ श्रीबलदेवप्रद्युम्नहरिपौत्रबधूसैनायुतसानन्द
श्रीद्वारिकापुरीगमनम्॥

कवित्त। प्रेम को बढ़ायकै सुश्याम गुण गायकै सो मोहि लियो बाणासुर भूपने गुपाल कौ। हो प्रसन्न श्याम नृपकुमरैं को गादी दै तिलक निजु हाथ कीन्ह शोणिप्रतिपाल कौ॥ लैकै हरि पौत्र बधू चले द्वारिका सिधार झारैं नभ दुन्दुभी नगारे घरियाल कौ। देव फूलवर्षैं ही हरषें अनन्तभांति नंदललनै सुयश भणत दै ताल कौ॥

चौ० सजेसकलयदुबंशिसमाजा। कोउ गजपीनसअश्व बिराजा॥
बोलत हँसत बकत बतरावत। पवन गमन गतिसम भे धावत॥

चलत चलत सबद्योस व्यतीता। सायंखन प्रभु लखि बिपरीता॥
सुथल पेखि यकसर अतिघोरा। प्रफुलित सघनबाग चहुँओरा॥
बहु प्रसून बाटिका दृढ़ातीं। महकें सुमन सुगन्धिसुहातीं॥
चहकें चहुँ बिहंग अम्बूहा। अलि अवली गुंजरित समूहा॥
हरि आयसु दै दलहि टिकावा। षटरसआमित अशनबनवावा॥
यदुभट राश वाश वह धामा। करनलगे सब निजनिजकामा॥
गहि शिलबटा पाथरी सोंटा। घोटत बिजया छानत लोटा॥
कोउ हुलस लै सूंघहि ताजा। चरस अफीम उड़ावहिं गांजा॥
कोऊ वृन्द जांय शौचालय। पुष्करन्हायँ जुड़ायँ हवालय॥
संध्यावंदन कृत्य सनातन। सुमिरणभजन करहिं बहुभांतन॥

दो० गात छाप गोपीचँदन भरे उछाह अनन्द।
भनहिं स्वरीले स्वरन सों कीरत नन्दन नन्द॥

सो० मुकुट मणी यदुबंश प्रति सिबिरन पठयो अशन।
जीमहिं यदुजन हंश कालबितावहिं सुखसहित॥

आनन्दछन्द॥

अथ द्वारापुरी नारदागमनम्॥

ऋषिराज साज साजे बहु साज बाज के।
द्वारावती बिराजे तट नृप समाज के॥
नृप उग्रसेन मुनि को आदर बहुत कियो।
दे अर्घपाद्यासन पूजन अशन दियो॥
नारद निहाल होकै सब हाल सुनायो।
बाण को जीत यादव अनिरुद्ध छुड़ायो॥
ब्याही कुमारि तासु त्यहि प्रद्युम्नलाल पै।
आवहिं हैं द्वारिकापुरी टिके हैं ताल पै॥

दै हाल ब्रह्म ललनै ध्यावत गुपाल को।
गे तातग्राम सुःखधाम मिल भुवाल को॥
चौ० सुनिसुनिबचनृपपरमनिहाला।पहुंचायो हरि गृह सबहाला॥
हरि रानीं पटरानी सारी। समाचार अस पाइ सुखारी॥
गुम्योपौत्र पुनि त्रिययुतआवत। यहसुखकोउनकहतबनिआवत॥
भरि भरि उमँग बिहँसि हुलसावैं। मँगलाचार बधावे गावैं॥
विदित भई चहुं कृष्ण अवाई। पुरबासी सब लोग लुगाई॥

अथ श्रीद्वारिकानिवासीजनपुरीबाहरगमन॥

सजि समाज श्रृंगार विशाला। पुरिबाहर धाईं बर बाला॥
उत प्रभु दल सरवर ते धावा। छिनक माहिं द्वारा तट छावा॥
श्रीप्रद्युम्न वृकोदर बीरा। सुन्दर श्याम सुभट सँगभीरा॥
नेति नेति नव छव फब बारे। निज निज बाहन आयुध धारे॥
जिन लखि भूलै भूख पियासा। रोग सोग सबहोंहिं विनासा॥
करिहरि दरश सकल दुखभाज। पुरजन सँगलै यदुन समाज॥
गावत विविध बजावत बाजा। द्वारावति लाये ब्रजराजा॥
सो० सजे सबन अस्थान दीपमालिका प्रज्वलितौ।
कांचक बहु सामान झार झवा हांड़ी दिपैं॥
दो० त्यहि छिन प्रतिगृहते निकर जरा क्वांरिका ज्वान।
हटा बटाटा चौहटा छई छजन को ठान॥
सो० निरखहिं श्याम स्वरूप तन मन वारहिं सुखभरीं।
गावहिं सुयश अनूप प्रेमसुधा बरसाइ रस॥

कवित्त मनहरण दंडक॥

प्रेमके पड़ाके पुंज आशाहू अनार छोड़ सरहुं सनेही चाउ चरखियां घुमातीथीं। यौबन जँमी गुराई गुल्दुपहिरी समानसुख महि-

ताबी वान हँसन विंगातीथीं॥ टट्टियाँटोलीनकी सुघमस गोलानकी प्रफुल्लिता फूल फुलझरियां फबातीथीं। छोंहिक छछूंदरी त्रिमलनु बताशे बिच्छू अमित अताशबाजी ललना छुड़ातीथीं॥

चौ० यहि विधिघूमधामसोंमाधव। जाइ भौन राजे युतयादव॥
जाम्बवती सत्या सतिभामा। कालिन्दी लक्ष्मणाभिरामा॥
भद्रा मित्रबिन्दया बामा। बसु पटरानी रुक्मिणिनामा॥
चाउभरी सुन्दरी पुनीता। ऊषा प्रिय अनिरुद्ध सहीता॥
अशिर्वाद बहु देत ललामा। रथन उतारि लैगईं धामा॥

अथ बना बनीगृहप्रवेशः॥

चौ० रूपूर बहु सुत बैठाई। करी रीति कुलदेव पुजाई॥
भूषन बसन अमितहित लाई। दीन्ह बहू बहु सुख दिखराई॥
बजैं बधावे मंगलचारू। नृत्यगान हों गहिर अपारू॥
ऐन चैन चितरैन गुजारी। भोरभये भइ जीवन वारी॥
व्यंजन अमित सुगन्ध मिलाये। षटरसभांति बहुत बनवाये॥

(षटरसनामानि)

चरपरील मिष्टिक निमकीले। तिक्त कसैल जलादि रसीले॥
सो कछु बरणि न जावैं मोपे। यहिविधि मँदिर समग्रिन तोपे॥

दो० ऋद्धि सिद्धि नवनिद्धि मिल अन्नपूर्णा आइ।
विविध विधाननिअशन भल सब रचधरे बनाइ॥

(अथ सिद्धी वसुनाम)

सो० अणिमा महिमा प्राप्त गरिमा प्राकाम्या पुनः।
लघिमा विशित्वव्याप्त बसुईशित्व सिद्धीललन॥

(अथ नवोनिद्धीनामानि)

कवित्त। नवो निद्धि भिन्न भिन्न श्रुतिहि प्रमाणतेन महापद्म

प्रथमा द्वितीय पद्म गाई है । शंख सो तृतीयनाम मकर चतुर्थकही कच्छप सो पंचमैं मुकुन्द षष्टि भाई है ॥ सप्त निधिकुन्द नील अष्टम विख्यात जग नवीं खर्ब्ब सर्ब्ब विधि शुभ सुखदाईहै । ललन मंसादि फलदाई श्रुतिगाई श्यामकिंकरी सुहाई नवनिद्धि चलिआई है ॥

चौ० चारहुवेद शास्त्रषट न्यारे । षट द्वादश उपपुराण सारे ॥
सप्त यकादश सर्ब्ब पुराना । पुण्य पुनीत प्रमोद सुदाना ॥
धरिधरि मनुजदेह कुल कर्म्मा । आगमने सम्पूरण धर्म्मा ॥
तिहुंपुरके शुचि तीरथ जेते । मानुष तनधरि आये तेते ॥
पर्व्वतादिगिरि नदी सागरा । देवनदी भनि रूप आगरा ॥
जपी तपी मुनियूथ महोतम । किन्नर गंधर्व्वादि पुनीतम ॥
बरुण कुबेर पवन आगमने । अग्नि अष्टरुद्रादि सोहने ॥
बार नवग्रह श्रीहनुमाना । भैरव परिकर सहित पयाना ॥
श्रीगणराज कीर्त्तिमुख मंजू । आये स्वामिकार्ति तन कंजू ॥
भानु मयंक विष्णु भगवाना । शेष महीधर शम्भु सुजाना ॥
विपुल महीसुर पुरी निवासी । महिपाला समूह चहुँ पासी ॥
नाति जाति को कौन गनावै । जाको पारावार न पावै ॥

दो० शक्तिमहा दुर्गा सकल लै लै आपन फौज ।
देवबधू आई बटुरि सुन्दरि भरीं मनोज ॥

सो० इन्द्रपुरी जन भार देवकोटि तेंतीसहू ।
निजनिज यानसवार आये सुरपति सुखभरे ॥

अथ सुरसवारिक पक्षीनामानि बर्णन मनहरण दंडक ॥

ववर्गा ॥ कवित्त । वदक वटेर वगरेल वकवासा वाज वेसरा औ वाइस वहरी सिताब वरकी । वानर वृकोदर वराह व्याल वाजी वाघ

वारण न जातवार यमके बगरकी ॥ खगपति वारिधिवधू के वार वीच बूढ़े ऐसी गतिलेन लागी पशुपक्षी नरकी। बाजेचढ़े वर्धपै विराजे वाजे वाजे चढ़े वाजे चढ़ बैठे पीठ वरदा के वरकी ॥

चौ० यहिविधिनिजनिजवाहनवासे। आये देव भेव सुखरासे॥
द्धारापुरी कृष्ण रजधानी। फली सोवरण फूल निधानी॥
चहुँ दिशि धूम धमार सुहाई। निरतैं सुरनवला सुखदाई॥
रांग रागिनी धुनि बहुताली। गावैं हरियश बने ढपाली॥
कनक गृहन बिच परे पांवड़े। रुचिर रतन मुक्तान मां जड़े॥
चरणपखार सकल महिमाना। बैठे जींमन अशन विधाना॥
कंचन थारन मणिन दिपावैं। अमित प्रकार अहार सुहावैं॥
उग्रसेन आदिक हरिदासा। परसहिं भोजन परमहुलासा॥
जीमैं सकल सुजन हित बाढ़े। भरित प्रमोद अमोदन काढ़े॥
वा छिनकी छबि को सक गाई। कहत बनै न लखतबनिआई॥
सुखसमस्त जहँ देयँ चाकरी। शोभा सहित उछाह बासरी॥
यदुत्रियसुखअवलोकि सिहातीं। मोदभरी बहुलाहु पुजातीं॥

दो० श्याम गौर सुन्दर बरण शोभासिन्धु अपार।
निजनिज परिकर बांधि प्रति गावैं अनुपमगार॥

सो० ऊंच स्वरन स्वर लाय लै लै लोगन नाम वर।
मधुर मधुर मुसक्याय कोउमंगल चरितनभनैं॥

अथ गारी दादरा बरवा रागिनी॥

जाहीबगिया में बोल मोरेनैहरके सुअना इसपै।
गारीगावैं सुनाय सखियां सलोनी सुकुमारियां॥

अन्तरा॥

धनि धनि घड़ियां सोनेकी जहँ रहे सुखछाय सारी शोभा

रहस्य विहारियां॥ १ ॥ धनि धनि नँदसुत के लालन जिन्ह सुत सुखदायआय जन्मो सुहनगृह वासियां॥ २ ॥ चिरजीवो ललन अनिरुद्ध जू धनि धनि तोरी माय जिन तुमसे जये सुत सुखारियां॥ ३ ॥ इति ॥

गारी इसपै नन्दामहरगृह सोहिलारे ॥

अथ पुनर्गारी ॥

धनि नन्दामहर सुत साँउलारे ॥ साँउला २ महरसुत साँउलारे ॥

अन्तरा ॥

धनिधनि आठौं पटरानी। वरभाग सुहाग सुहानी॥ हरीपति पाँउलारे १ धनि रुक्मिणि भाग सुहाती। जिनपाये नतिबहू नाती॥ लह्यो लहलाहुलारे २ धनि यामवती सतिभामा। सत्याकालिंदीबामा॥ भरी चितचाउँलारे ३ लक्ष्मणाललाम सुभागी। भद्राहरिपद अनुरागी॥ सुयशश्रुति छाँउलारे ४ धनि मित्र विन्दया प्यारी। मनमोहन राजदुलारी॥ सुहाग सुहाँउलारे ५ धनि धनि यह द्वारा नगरी। जहँश्रीप्रभु आनँद घनरी॥ निवास निवाहुलारे ६ धनिधनि यहजीमनवारी। सुरकरत सकल मनुहारी॥ सुमनभरि लाउँलारे ७ धनि धनि हम सब के भागा। नँदललन चरण चित लागा॥ सुभगदिन आउँलारे ८ ॥ इति ॥

चौ०नारिगारिसुनिसकलअनंदेउ। जीम उठे हरियश पदबंदेउ॥
यदुजन द्वारानगरि निवासी। प्रमुदितनृपतिनिकर चहुँपासी॥
अदन अरोग भोग सुख सारे। श्याम रजायसु मांगहिं ठारे॥
श्री मनमोहन कृपानिधाना। कीन्हबिदा सबसों हित माना॥
जोज्यहिलायकत्यहितसयोगू। सब सनमाने पुरजन लोगू॥
नाति जाति बहुभांति समाजा। सबहिन सनमान्यो ब्रजराजा॥

नेग योग दै नाइन नेगिन। अतिथन रंकन दैधन भेजिन॥

अथ अनिरुद्धबराती निज निजपुर गमनम्॥

चौ॰ यथा उचितलैबिपुल बिदाई। सुभटसैन निजभौन सिधाई॥
प्रभुपद परस हरष हिय धारे। श्रीहरियश भनसकल सुखारे॥
पुनि प्रवीण प्रद्युम्न समीपै। धायआय बलराम बलीपै॥
बंदिन विनय सुयश बहुभांता। गमनेनिज निलयन मृदुगाता॥
जैजैकारि भारि धुनि मांची। कानधरी कछुजाय न बांची॥

दो॰ बिपुल यान आसीनह्वै देवशक्ति मुनि जेति।
गिरि सागर तीरथ सकल राग रागिनी तेति॥

सो॰ महिसुर सकल समाज धायेदेत असीस सब।
कोउ गज बाजिन बाज राजे साज समाज कै॥

कवित्त॥ तांबई तयूसी तूसी ताजी तेलिया तराल तोतई तँबुखिआ तूनीतीतुरी तिलंग हैं। तोफई ललन ताजी तिलखा तलीसि तीव्र तोसई ततेर तारु तल्तरा तरंगहैं॥ तीतुली तयूसी तूलि तामड़ा तरेल तुर्की तेंदुए तुपकी तरवारी तने तंग हैं। तक्कत तमक्कत तड़क्कत तुरक्कत तुनक्कत तनक्कत तरक्कत तुरंगहैं १॥ दुल्दुल् दमीले दमीले दामवार दीर्घ दादुरी दिलावर दबंग द्युति दागेहैं। दीनता दुराते दरशाते दमखम्दराज दंतिया दुदन्त दप्र दामिनी दवा में हैं॥ दुलरहिं दुलराते दौर दुलकी दुनाते दुन्दै दुन्दत दताते ते दिपाते दिव्यतामें हैं। दुम्मन दवामें हैं दूबरत दहामें हैं दगन दम्दमामें हैं ललनपन् दिखामें हैं २॥

कविता छन्द॥

आमैहैं गामैहैं लामैहैं कामै हैं घामैहैं चामैहैं छामैहैं जामै

हैं ॥ १ ॥ झामैं हैं ठामैं हैं डामैं हैं ढामैं हैं तामैं हैं थामैं हैं दामैं हैं धामैं हैं ॥ २ ॥ नामैं हैं पामैं हैं फामैं हैं वामैं हैं भामैं हैं मामैं हैं यामैं हैं रामैं हैं ॥ ३ ॥ लामैं हैं सामैं हैं हामैं हैं भ्यामैं हैं श्यामैं हैं श्यामै के नामको ध्यामैं हैं ॥ ४ ॥

चौ० देशदेश दिशिदिशि चहुँघाहीं। परिभगार नभमारगमाहीं ॥
हरिगुणगाते आनँद पाते। जायनिवासे सदन सुहाते ॥
पुनि कुलनारि शृँगार सजेती। रुक्मिणि बोलि ठठोलि समेती ॥
मणिमन्दिरबिच बिछी बिछायत। मखतूली बहुलगीं लगायत ॥
हावभाव युत गहिकर पाना। तहां त्रियन दीन्हो प्रस्थाना ॥
षटरस अमितप्रकारिक भोजन। जिमईं सबन समाय सनेहन ॥
कनक माणिन मन्दिर द्युति दामें। तिनमेंशशि सुकुमारि सुहामें ॥
षोड़श सहस आदि हरिरानी। अमित तियनगनरूपनिधानी ॥
मनहुँ इन्द्रपुरि कोटिन सोहैं। मदनमान मरिजात प्रमोहैं ॥
सुन्दर सखि सुकुमारि सलोनी। यकयक तन छबिद्युति अनहोनी ॥
धृग मृगदृग लोचन द्युतिरासी। चितचोरनिचितवनि चपलासी ॥
कोकिल बैनी हिय हरलैनी। मृदुलमंजु स्वरखानि सृजैनी ॥

दो० बरन बरन अभरन रतन भाभमकैं भड़कील।
अमितप्रकार सुहावनी मनभावनी सुशील ॥

सो० बसन बिलासैं जौन जे तनते न्यारेहि बरन।
परम सोहने तौन रँगे रँगीले रँगन सन ॥

कवित्त। बैंजनी गुलाबी नीले पीले लालआबी सब्ज संदली सहाबी महताबिया कपूरिया। कासनी बसंती सेति सुर्मई सुनहैले शुभ पिस्तई पियाजी फाखताइया अबीरिया ॥ फालसी उनाबी ऊदे सेवती बदामी बहु मूंगई मंजीठी मासी धानियां

पलासिया। चंपई तँबखुआ लाखी ताखी अनेक विधि ललना रँगीन वस्त्र साजे सो अपारिया॥

चौ० बरणैं रुक्मिणि सुयशप्रतापू। भनैं बधावे उच्च अलापू॥
लखि छबि देव सुमनझरि बरसैं। इन्द्र दुन्दुभी धुनि आदरसैं॥
झिगरैं सखि जतराय सुप्रीती। लहैं मानसनमानिक रीती॥
श्री भीष्मक तनया हितलाई। दीन्ह बिदाई सबन सुहाई॥
आशिषदेत सकल चलिधाईं। निजानिजभवनआनि सुखछाई॥
धनि धनि श्री यशुमति नँदराई। धनि बसुदेव देवकी माई॥
धनिधनि श्रीनँदसुवन कन्हाई। जिनकीमहिमा जगतजनाई॥
धनि यदु मुकुटमणी बलराई। संतजनन रंजन सुखदाई॥
धनि प्रभुसुत प्रद्युम्न खरारी। धनिधनि श्रीअनिरुधबलिहारी॥
जिन यशकहतसुनतअघनाशैं। भव भय बाधात्रिपतिविनाशैं॥
सुनैंकथा अनिरुध यशकेरी। नेम प्रेम युत कपटनिवेरी॥
तिन्हैं न कोउ दुखरोग सतावैं। एते ज्वर समीप नहिंआवैं॥

दो० वातज्वर पित्तज्वरौ कफज्वर बाती पित्त।
वात कफज्वर पित्तकफ सन्निपात ज्वर जित्त॥

सो० विषम सतत संतत्त आगन्तुक ज्वर अतरिया।
अभिचारज्वर अत्त नशैं तिजारी चौथिया॥

छंदगीतिका॥

श्रम, श्राप, क्षत, मल, मूत्र, दृष्टौ, घात चोटज्वर यथा।
आजीर्ण, आमा, रक्त, संधिक, सन्निपातज्वर तथा॥
रुग्दाह, अन्तक, चित्तविभ्रम, अभिन्यासउ सन्निजे।
शीतांग, तन्द्रिक, कंठकुब्जो, भुग्ननेत्र अनन्य जे॥
वरणक, प्रलापक, जिह्वको, रक्ताष्ठिवी संन्यादि जे।

औषधि जनित, भय,शास्त्रघाती, कोप, खेदज्वरादि जे ॥
अभिचार, वामप्रसंग, संतत, क्षीण धातू ज्वर जिते।
मंदाग्नि, विषम,महेन्द्र, बेला,त्र्याहिक,द्व्याहिक ज्वरतिते ॥
एकान्त, चातुर्थिक, एकांगद, देवकोप जनित ज्वरा।
रसगत्त, अन्तक, शोक, त्वग्गतवात, सब होवैं क्षरा ॥
ज्वर घातपाकी, शुक्रगत, त्वग्गत्ति पित्तज्वर जरैं।
मज्जास्थिगत, ज्वरमांस, मेदा, रक्त गत, ज्वर सबटरैं ॥
औरहु अमितज्वर देह दाहक कथा सुनत बिनाशहीं।
तन दिव्य दारुण भाप्रदा यश ललनदा सुखराशहीं ॥
जे हरियश सुनावैं सुनैं पढ़ैं कहैं कथा चितलायकै।
ते भक्ति प्रभुपद लहैं जग सुखकरैं सदा अघायकै ॥

इति श्रीअनिरुद्धऊषास्वयम्बरोत्तरार्द्धम् कथा श्रीशुकदेव
परीक्षितसंवादेशुभमसम्पूर्णम् ॥

मि० कार्तिकसुदी द्वितीया भृगुवासरे सं० १९५३ कानपुर
नयाचौक स्थान श्रीमनभाई मंगलसेन पाठकजी ॥

श्री श्यामाश्यामायनमः ॥

छन्दोर्णवपिंगल क़ी० ≈)

जिसमें मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघु गुरु स्थापन रीति और सब छन्दों के दृष्टान्त सहित रूप हैं ॥

कविकुलकल्पतरु क़ी० ।–)॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दों में नायकाभेद की पूरी बातें लिखी हैं ॥

सतशयी सटीक बिहारीलाल जी रचित क़ी० ।≈)

श्रीकृष्ण राधाजी के विषय में सम्पूर्ण नायकाभेद का वर्णन सातसौ दोहोंमें है और दोहेकेभावार्थके सवैये और कवित्तभी हैं ॥

तुलसीशब्दार्थप्रकाश क़ी० ।)

गोपालदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रों के मतसे सर्व प्रकारके गूढाशयों का कथन और जातक ताजक सामुद्रिक की मुख्य बातें गणित, योग, शास्त्र और विवाह और यात्रादिके मुहूर्त्त और इसी प्रकारके असंख्य विषय हैं जो पुस्तक के पढ़ने से जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न क़ी० ≈)

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादी रत्नकुँवरि रचित केवल श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजी की भक्तिपक्ष का विषय दोहा चौपाई में है ॥

जगद्विनोद क़ी० ≈)

पद्माकरकविकृत जिसमें नायकाभेदमें सबप्रकारके रस वर्णन कियेगये हैं ऐसी उत्तम सर्वलक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहीं है ॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह क़ी० ≡)॥

हफ़ीज़ुल्लाहख़ां संगृहीत–जिसमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर छहोंऋतुओं के कवित्त व सवैया ऐसे २ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परमचुहचुहे रसीले, अपने रसिकमित्रों व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्तविनोदार्थ बड़े परिश्रम से छांट २ कर लिखे गये हैं ॥

प्रेमतरंगिणी क़ी० –)॥

मुन्शीहफ़ीज़ुल्लाहख़ां संगृहीत इसमें चित्र विचित्र सामयिक देवपक्ष व प्रत्येक ऋतुओं के कवित्त सवैया हरएक कविके बनाये हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम होती है ॥

कृष्णसागर क़ी० ।–)

राधाकृष्णजी रचित जिसमें श्रीकृष्णजी का नवीन रीति से परिपूर्ण चरित्र वर्णित है ॥

विश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर बातसवीर क़ी० ३)

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियोंके लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीन रीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचेहुये हैं ॥

साईकेसौख्याल पहिला और दूसरा हिस्सा क़ी० ॥।)

इसके पहले हिस्से को रघुवीरमिश्र और दूसरे हिस्से को पण्डित रामबिहारी सुकुल और पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्रजी ने उर्दू से हिन्दी में रचना किया है इस में उत्तमोत्तम ख्याल वर्णित हैं ॥

———